कर्णवास

समर्पण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के ज्येष्ठ-स्नातक

तथा

मुख्याधिष्ठाता, भारतीय राज्य सभा के सदस्य

प्रसिद्ध पत्रकार व साहित्यज्ञ

श्री प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति एम.पी.

के

कर कमलों में

श्रद्धेय,

मेरे आपके कई नाते हैं। आप आर्य समाज संगठन के सर्वश्रेष्ठ पदाधिकारी मैं अकिंचन सेवक। आप प्रसिद्ध पत्रकार और ग्रन्थकार-मैं पत्रकारों और ग्रन्थकारों का विनीत सेवक, आप महर्षि दयानन्द के परम श्रद्धालु अमर शहीद राजर्षि स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र और उत्तराधिकारी-मैं उस बरेली नगर का नगण्य निवासी जहाँ सर्व प्रथम "दयानन्द-दिवाकर" की ज्ञान किरण ने नास्तिक मुंशीराम के हृदय मन्दिर को जगमगाया। और सबसे बड़ा नाता यह है कि बरेली के मुंशी चौक के प्रसिद्ध रईस मुं० राजाबहादुर मेरे फूफा के ही मकान में तो आपके पूज्य पितामह और पिता जी रहते थे।

और भी नाता है। मेरे स्व: पिता श्री प्रेम नारायण ने आपके पिता के संस्थापित गुरुकुल से प्रेरणा लेकर अहिरौला में सरस्वती विद्यालय की स्थापना की थी। मेरे पूज्य स्व: डा० श्याम स्वरूप सत्यव्रत को भी तो स्वामी जी पुत्रवत मानते थे।

अतः

आपके पूज्य पिता स्वर्गीय स्वामी जी की जन्म शताब्दि के सुअवसर पर

"कारावास नाटक"

आपको सादर समर्पित करता हूँ।

विनयावनत —

चन्द्र नारायण

पात्र परिचय

स्वामी दयानन्द सरस्वती	प्रसिद्ध सुधारक व वेद प्रचारक
पं० टीकाराम	स्वामी जी के प्रथम शिष्य ।
राव कर्णसिंह	बरौली के जागीरदार
भगवान दास	एक भागवती पंडित
नन्द राम	एक चक्रांकित
ठा० गोपाल सिंह	कर्णवास के रईस
चौ० छत्र सिंह	एक वेदान्ती जाट
सैय्यद मुहम्मद	अनूप शहर के तहसीलदार
कल्याण सिंह	नाइब तहसीलदार
राम सहाय	स्वामी जी को विष देने वाला एक ब्राह्मण
अवधूत	राव साहब का भृत्य
पं० अम्बा दत्त	एक पर्वती विद्वान
पं० हीरा वल्लभ	एक पर्वती वेदज्ञ
ब्र० क्षेमकरण	एक मूर्त्ति पूजक, स्वामी जी का शिष्य

अन्य

ब्र० केशव देव, पुरोहित, नवलजंग पहलवान, प्रहरी ग्रामीण, वामी गुण्डे, आक्रमण कारी, कलक्टर पादरी आदि ।

नोट :-

यह गाना भी प्रस्तावना के अन्त में गाया जा सकता है ।
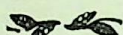
भारत के परम सुधारक की हम कथा सुनाते हैं ।
वेदों के परम प्रचारक की हम छटा दिखाते हैं ।
'गुरुधाम' जिस समय छोड़ा, सन्मार्ग ओर मुख मोड़ा ।
आर्ष ग्रन्थ से जोड़ा नाता अनार्षों से तोड़ा ।
नगर नगर में फिरे, मौन भी रहे, नहीं घबराये ।
ऋषि शुद्ध सनातन वेद धर्म को पुनः जिलाते हैं ॥१॥
ऋषि कर्णवास में आये, यज्ञोपवीत पहिनाये ,
शास्त्र ज्ञान में बड़े बड़े दिग्गज विद्वान हराये ,
मूर्त्तियों छोड़, कण्ठियां तोड़, बहुत हर्षाये ,
सुन सुन कर ऋषि उपदेश ऋषी का मत अपनाते हैं ॥२॥
नृप कर्णसिंह अभिमानी, ऋषिवर से शत्रुता ठानी ,
एक दिवस तल्वार खींच कर दौड़ पड़ा मनमानी ,
आसन से तब उठे, खड्ग कर लिये, खंड कर डाले ।
लख ब्रह्मचर्य का तेज सभी पापी दब जाते हैं ॥३॥

प्राक्कथन
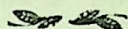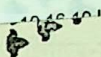
महर्षि दयानन्द के जीवन विषयक लेखक का यह दूसरा नाटक है। 'गुरुधाम' नामक उनका पहला नाटक, इससे पूर्व प्रकाशित हो चुका है। दोनों नाटकों के लेखक बन्धुवर श्री चन्द्र नारायण जी एडवोकेट, भारत प्रसिद्ध नाटककार श्री पं० राधेश्याम कथावाचक के सुयोग्य शिष्य हैं। नाटक लिखने और खेलने की रुचि श्री चन्द्र नारायण जी को बाल्य-काल से ही रही है। यह नाटक महर्षि जीवन महर्षि-विचार-धारा तथा महर्षि द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म-प्रचार के उद्देश्य से लिखा गया है। अभिनय में भी यह सफल सिद्ध हो चुका है। सम्पूर्ण नाटक पढ़ने के पश्चात यह बात दृढ़ता से कही जा सकती है कि लेखक महोदय को अपने उद्योग में सफलता मिली है, और उनका उद्देश्य पूरा हुआ है।

इस नाटक में स्त्री-पात्र का सर्वथा अभाव है। फिर भी उसकी सरसता में कमी नहीं आने पायी। पढ़ने में निरन्तर रुचि बनी रहती है और मन जरा भी नहीं उचटता। संवाद शैली संक्षिप्त किन्तु समीचीन है। नाटक में, संस्कृत की पुरानी पृथा के अनुसार गद्य के साथ पद्य का भी संमिश्रण किया गया है। आधुनिक नाटककार प्राय इस गद्य पद्यात्मक शैली को पसन्द नहीं करते। परन्तु चन्द्र नारायण जी ने इस पुरानी परम्परा को बड़ी सुन्दरता तथा स्वाभाविकता से अपनाया है। आपका पद्यांश भी रोचक तथा प्रभाव-पूर्ण है।

नाटक के गाने भी समयानुकूल एवम् आकर्षक हैं। आर्य सिद्धान्तों का निर्वाह सम्यक् रीति से किया गया है। ईश्वर के साकार या निराकार होने का विवाद पुराना है, इस नाटक में भी यह, शास्त्रार्थ

या प्रश्नोत्तर-प्रणाली के रूप में उल्लिखित है। शास्त्रार्थ की शैली ऐसी सुन्दर है कि विरोधी विचार-धारा के व्यक्तियों को भी उसमें अद्भुत आनन्द आता है और प्रचुर-रस प्राप्त होता है। कटुता का तो कहीं कण भी नहीं दिखायी देता।

दयानन्दर्षि मूर्ति-पूजा और अवतार-सिद्धि के लिये, वैदिक प्रमाण माँगते हैं, परन्तु कोई भी विद्वान् ऐसा प्रमाण नहीं दे पाता और न वेदों द्वारा मृतक श्राद्ध-विधि समर्थन करने का ही किसी में सामर्थ्य होता है। यह विषय इस नाटक में बड़ी कलात्मक रीति से दर्शाया गया है, जिसे दोनों पक्षों ने पसन्द किया है। इस नाटक में कोई पृथक 'प्रहसन' नहीं रखा गया; सम्वादों में ही सुरुचि पूर्ण हास्य की रंजना देकर मनोरंजन-सामग्री प्रस्तुत करदी गयी है, नन्दराम चक्रांकित और छत्रसिंह वेदान्ती के संवाद बहुत सरस और सुन्दर हैं।

रंग मंच पर, यज्ञोपवीत-पद्धति तथा यज्ञ-विधि संक्षेप रीति से प्रदर्शित की गयी है। पूरा संस्कार दिखाना न तो सम्भव था और न अपेक्षित। संकेत से जो दृश्य दिखाया गया है, वह पर्याप्त एवम् प्रभावोत्पादक है परन्तु नाटकीय पद्धति को ऋषि प्रोक्त प्रणाली मानने की भूल कभी न करना चाहिये।

ऋषि दयानन्द के कर्णवास-वास के साथ समीपवर्ती अनूप शहर, बेलोन आदि स्थानों की घटनाओं को भी बड़ी सुन्दर रीति से क्रम-बद्ध किया गया है। इस क्रम के लिये कल्पना का आश्रय अनिवार्य था, परन्तु यह कल्पना वास्तविक वस्तु-स्थिति में बाधक नहीं हो सकी।

श्री स्वामी दयानन्द सम्बन्धी नाटक रंग-मंच पर लाया जाय या नहीं, यह प्रश्न अभी तक विवादास्पद बना हुआ है। इसके पक्ष-विपक्ष में यहाँ विचार नहीं किया जा सकता। उसकी निर्णयात्मक व्यवस्था तो आर्य समाज की शिरोमणि सभा के विचाराधीन है। परन्तु इतना

निर्विवाद कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द की आदर्श एवम् परमोज्ज्वल जीवन-घटनाओं और उनकी उदान्त एवम् विमल विचार-धारा के प्रचार हेतु नाट्य-कला भी एक सफल और सांस्कृतिक साधन है। अभिनव आविष्कारों से भी इस दिशा में समुचित सहायता ली जा सकती है। आशा है, आर्य समाज के विद्वान्, नेता तथा शिरोमणि संस्थान, प्रचार की प्रत्येक प्रणाली के तत्त्व-महत्व और गौरव-गाम्भीर्य पर उचित विचार करके इस सम्बन्ध में अपना निर्णय देंगे। अस्तु।

इस सुन्दर सफल, सरस और शिक्षाप्रद रचना के लिये मैं लेखक महोदय को बधाई देता हुआ उनकी सफलता के लिये शुभ कामना करता हूँ।

शङ्कर-सदन
आगरा
चैत्र शु. ५, संवत् २०१४

हरि शंकर शर्मा
कविरत्न
भूतपूर्व सम्पादक "आर्य-मित्र"

❀ ओ३म् ❀

प्रस्तावना

0
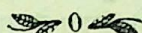
मङ्गलाचरण

शन्नो मित्रः शंवरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः
नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि
ऋतं वदिष्यामि सत्यम् वदिष्यामि
तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु
अवतुमाम वतु वक्तारम

सूत्रधार— जय जय जय अद्वय अलख अविनाशी अखिलेश ।
सब को मेधा बुद्धि दो सुधरे भारत देश ।।

सत्यकाम—(आकर) पूज्य ! आज तो फिर सूत्रधार का बानक बनाया है। फिर रंगमंच सजवाया है। क्या कोई और एकांकी खेलने का विचार किया है ?

सूत्रधार—हां 'गुरुधाम' के पश्चात 'कर्णवास' तैयार किया है।

सत्यकाम—"कर्णवास" ?

सूत्रधार—हां- "कर्णवास" ! कर्णवास जिला बुलन्दशहर में राजपूतों की बस्ती है, समीप ही भागीरथी बहती है। हरिद्वार के कुम्भ पर सर्वस्व त्याग कर जब स्वामी दयानन्द विचरण करते हुये आये तो उन्होंने कर्णवास को ही प्रचार का केन्द्र

बनाया, यहां से चासी, राम घाट, अहार, गढ़ियाघाट, वेलौन, अनूप शहर आदि स्थानों पर जा जा कर वेद का सन्देश सुनाया। इन सभी स्थानों की मुख्य मुख्य घटनाओं को आज के एकाङ्की में दिखायेंगे। ऋषि जीवन के इस महत्त्वपूर्ण भाग को जनता के सामने लायेंगे।

घटनायें बहुत समय थोड़ा, फिर साधारण यह कृत्य नहीं।
सागर को गागर में भरदें इतना हम में सामर्थ्य नहीं॥

सत्यकाम—अपराध क्षमा हो तो निवेदन करूं। स्वामी जी का सारा जीवन मूर्तिपूजा, अवतार, मृतक श्राद्ध तथा मतमतान्तरों के खण्डन ही में बीता। जब वे खण्डन की बातें आप रंगमंच पर दिखायेंगे तो देखने वाले चिढ़ न जायेंगे ?

सूत्रधार—इस में चिढ़ने की तो कोई बात नहीं है। स्वामी जी ने द्वेष से किसी मत का खण्डन नहीं किया। वे जिस बात को वेद विरुद्ध समझते थे उसका खण्डन करते थे। जिससे मनुष्य वेद मार्ग को अपनायें, उस पर चल कर आनन्द धाम को जायें।

सत्यकाम—तो क्या वैदिक धर्म के अतिरिक्त सब धर्म झूठे हैं ?

सूत्रधार थोड़ी थोड़ी सच्चाई तो सभी में है - और जो है वह वेद से ही ली है—तो फिर वेद-धर्म को ही जो शुद्ध है सनातन है क्यों न अपनायें ?

वेद ईश-सन्देश है सत्य ज्ञान का स्रोत।
तरने को भव-सिन्धु से वेद ज्ञान है पोत॥

सत्यकाम—आपका कथन सत्य है। तो क्या स्वामी जी कोई नया पंथ चलाना चाहते थे ?

सूत्रधार—नहीं कभी नहीं, वे पन्थों को मिटाकर एक ईश्वर एक धर्म और एक राष्ट्र बनाना चाहते थे। मनुष्यों के चलाये हुये

पन्थों को हटाकर ईश्वर का धर्म चलाना चाहते थे।

सत्यकाम—आप तो नई बात कह रहे हैं। लोग तो यही समझते हैं कि उन्होंने केवल खण्डन ही खण्डन किया है।

सूत्रधार—ऐसा नहीं है। आर्य समाज के दस नियम पढ़ो। पहिले नियम में महर्षि ने बताया कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है, तात्पर्य यह कि परमेश्वर का ज्ञान सच्चा और मनुष्यों का सच्चा नहीं हो सकता।

सत्यकाम—यह ठीक है।

सूत्रधार—दूसरे नियम में उन्होंने बताया कि ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, न्यायकारी, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वाधार, सर्वान्तर्यामी है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

सत्यकाम—यह भी ठीक है।

सूत्रधार—तीसरे नियम में यह बताया कि वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना सब का परम धर्म है।

सत्यकाम—पहले और दूसरे नियम में एक ईश्वर की उपासना और तीसरे में एक धर्म की धारणा यही न—और शेष सात नियमों में ?

सूत्रधार—एक राष्ट्र की स्थापना।

सत्यकाम—तब तो उनकी बातें सर्वथा माननीय हैं। तो 'कर्णवास' नाटक भी श्री चन्द्र नारायण वकील की रचना है ?

सूत्रधार—हाँ- जाओ, पात्रों को भली भांति समझाओ, अभिनय की तैयारी कराओ उत्साह और प्रेम से नाटक दिखाओ। क्यों ? कुछ सङ्कोच है ?

सत्यकाम—महाराज ! लोग कहते हैं कि स्वामी जी ने नाटकों का

निषेध किया है। इसे भडुओं का काम बताया है।

सूत्रधार -स्वामी जी के समय में नाटक-कला भडुओं के हाथों में चली गई थी, इसलिए ऐसा उन्होंने किसी पत्र में लिख दिया। नाटकों का तो वेद में भी विधान है।

जग्राह पाठमृग्वेदात् सामभ्यो गीति मेवहि
यजुर्वेदादभिनयान् ,,
शिल्पानाथर्वणादपि

नाटक-कला भरतमुनि ने ऋग्वेद से सम्वाद, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्वेद से शिल्प लेकर बनाई है। स्वामी दयानन्द ने अपने किसी ग्रन्थ में यह कला दूषित नहीं बतलाई है। नाटक कला के विरुद्ध कहीं लेखनी नहीं उठाई है—

भाँड नहीं थे भरतमुनि भाँड नहीं थे भास।
भाँड नहीं भवभूति थे या कवि कालीदास॥

सत्यकाम—आपका कथन तो सत्य है महाराज! परन्तु स्वामी जी ने कई बार कहा है कि राम और कृष्ण का रूप भरवाकर लौंडों को गली कूंचो में नचवाना उन महापुरुषों का अपमान करना है? तब स्वामी जी का वेष बनवाकर किसी को रंग मंच पर लाना क्या स्वामी जी का अपमान नहीं है?

सूत्रधार—नहीं- कभी नहीं। तुम्हें अभी अभी तो बताया कि राम और कृष्ण की लीला भडुओं ने दिखाई तो उन्हें माखन चुरैया, चीर हरैया, नचकैया गवैया बनाकर दिखाया। अच्छे नाटककार श्री पं० नारायण प्रसाद बेताब, कविरत्न पं० राधेश्याम कथावाचक ने उन्हें रंग मंच पर योगिराज और योगेश्वर का पद दिलाया।

गुण निर्गुण के संग में बन जाता है दोष।
गुण गुणज्ञ के पास हो तो देता सन्तोष॥

सत्यकाम—कल को कोई स्वामी जी को भी बुरे रूप में प्रस्तुत करे तो आप क्या करेंगे ?

सूत्रधार--तो इस भय से उन्हें अच्छे रूप में भी प्रस्तुत न किया जाये। यदि अग्नि वायु आदित्य अंगिरा को भी यही आशंका होती कि उवट सायण और महीधर वेद मंत्रों के अर्थों में अनर्थ करेंगे तो वे वेद ज्ञान के मंत्र प्रकट ही न करते ? आगे चलकर यदि कोई स्वामी जी के जीवन का उपहास उड़ायेगा तो उसे कानून के शिकंजे में कसवा दिया जायेगा। आर्य समाज निर्बल नहीं है बल से उपहास को बन्द करा दिया जायेगा।

गौरी शङ्कर गिरि से महान ऋषि का व्यक्तित्व समुज्ज्वल है।
मन मान सरोवर से बढ़कर जिस योगेश्वर का निर्मल है॥
है पारिजात से भी पवित्र, ध्रुव के समान जो निश्चल है।
परिपूर्ण दया से मुनिवर का आनन्द धाम अन्तस्तल है॥
उनका उपहास उड़ाने का जो दुस्साहस दिखलायेगा।
उस का दुस्साहस साहस से तत्काल दबाया जायेगा॥

सत्यकाम आप ठीक कह रहे हैं, परन्तु, मेरा मन नहीं मानता।

सूत्रधार—इस वहम का उपचार तो धन्वन्तरि के पास भी नहीं है विचार करोगे तो तुम भी मुझ से सहमत हो जाओगे।

सत्यकाम आखिर आप को भी क्या जिद है कि भगवान दयानन्द के जीवन को नाटक-रूप में दिखाया ही जाये।

सूत्रधार—वत्स ! यह ज़िद की बात नहीं है—गम्भीरता से सोचो—आज कृष्ण, बुद्ध, ईसा, कबीर, चैतन्य महाप्रभु, स्वामी विवेकानन्द, तुलसीदास, सूरदास के जीवन के चलचित्र बन चुके।

जनता में उनके जीवन, उनके सिद्धान्त उनके ज्ञान और आदर्शों का प्रचार हो रहा है। नई सन्तति स्वामी जी के नाम और काम से सर्वथा अनभिज्ञ है।

सत्यकाम तो उनकी जीवनी संसार की सब भाषाओं में छपवाइये और जनता में बँटवाइये।

सूत्रधार—श्रव्य काव्य का उतना प्रभाव नहीं होता जितना दृश्य काव्य का होता है। इसलिये हमें आधुनिक आविष्कारों का उपयोग करना चाहिये। चल-चित्र आदि साधनों को अपनाना चाहिए।

सत्यकाम—आपकी तर्क का तो मेरे पास कोई उत्तर नहीं है। परन्तु—

सूत्रधार—तुम्हें इतना समझाया, परन्तु तुम्हारी परन्तु न गई। जाओ पात्रों को भली भांति समझाओ। रंग मंच पर वेद धर्म का महत्व स्थापित हो जाये, दर्शकों के हृदय पर वेद का गौरव अंकित हो जाये।

सारे मानव समदर्शी हों घर घर दर्शन हो दर्शन का।
सत्कार और सम्मान बढ़े त्यागी और तपसी ब्राह्मण का॥
जल जाये झूठे और कल्पित मत और मतान्तरों की लङ्का।
बजने लग जाये पृथ्वी पर फिर चहुं दिश वेदों का डङ्का॥

॥ गाना ॥

वेद धर्म है महान विश्व को बतायेंगे।
वेद का सन्देश देश देश को सुनायेंगे॥
ऋषि का ऋण चुकायेंगे। वेद धर्म—
वेद ही है सत्य ज्ञान,
वेद है स्वतः प्रमाण,

वेद का प्रमाण शास्त्रार्थ में चलायेंगे
वेद पथ दिखायेंगे ॥ वेद-धर्म—
छात्र पढ़ें वेद शास्त्र,
पात्र बने प्राणिमात्र,
प्राणी मात्र के लिये पढ़ायेंगे सुनायेंगे
टेक यह निभायेंगे। वेद धर्म॥

"कर्णवास"

।।।

प्रथम अङ्क

—:※:—

प्रथम दृश्य

बरौली के राव कर्णसिंह का दरबार। पं० नन्द राम, पं० भगवान दास ब्रह्मचारी केशव देव आदि शोभायमान हैं अन्य जन यथा स्थान हैं। मुख्यासन रिक्त है। राव कर्णसिंह का खड्गधारी प्रहरियों के साथ प्रवेश तथा अपने आसन पर विराजमान होना।)

भगवान दास—

क्षत्री-कुल- भूषण हैं, शत्रु-कुल-दूषण हैं,
तेज - धारी छत्रधारी धर्म - अवतार हैं।
ज्ञानवन्त शीलवन्त बुद्धिमन्त दयावन्त,
गुण-निधान बल-निधान कलाकार हैं॥
मानी स्वाभिमानी हैं हठीले गर्वीले हैं,
धनी तलवार के हैं वीर सरदार हैं।
भक्त चक्रधारी के हैं; शिष्य रंगाचारी के हैं,
ग्राम ग्राम नगर नगर जै जेकार हैं॥

एक - जय, जय, बरौली अधिपति राव कर्ण सिंह की जय।
दूसरा–जय जय परम वैष्णव गुरुदेव रंगाचारी की जय॥
राव—सतियों में श्रेष्ठ कौन?
सब—सीता।
राव—ग्रन्थों में श्रेष्ठ कौन?
सब—गीता।
राव - देवों में बड़ा कौन?
सब—पद्म, शङ्ख, गदा, चक्र धारी—
राव—गुरुओं में बड़ा कौन?
सब—परम वैष्णव रङ्गाचारी।
राव—निःसन्देह!

शेष है पाताल में और देव-गुरु स्वर्लोक में।
वैसे ही गुरु देव रङ्गाचारी हैं भू लोक में॥

नन्दराम – सत्य है महाराज! आज गुरुदेव का सर्वत्र प्रताप छाया है। सभी ने उनका यश गाया है। नर नारियों की तो बात क्या–गज, अश्व, गौ, वृषभ भी कण्ठी तिलक माला धारण करते हैं, शुक और सारिका भी 'राधेश्याम' 'राधाकृष्ण' उच्चारण करते हैं।

राव—बड़े आनन्द की बात है। रियासत भर में वृक्षों के तनों पर भी चक्र अंकित करा दो। स्त्री, पुरुषों, गजों, अश्वों के तन गुदवा दो—

राज्य में मेरे प्रजा इस चिन्ह से वंचित न हो।
कोई ऐसा जन न हो जो पूर्ण चक्राङ्कित न हो॥

केशवदेव—धर्म प्रचार की यह चाल अब न चल सकेगी। इस इलाके में दाल न गल सकेगी।

राव—क्या मतलब?

केशवदेव—मतलब यह है कि 'कर्णवास' में स्वामी दयानन्द ने डेरा जमाया है। वे मनुष्य-कृत-सम्प्रदायों का बहिष्कार करते हैं शुद्ध सनातन वेद-धर्म का प्रचार करते हैं।

राव—दयानन्द ! कौन दयानन्द ?

केशव—हिन्दू-धर्म के परम सुधारक, महान योगी वेदोद्धारक।

राव—हिं -ऐसे जाने कितने ढोंगिये फिरते हैं जो वेद की दुहाई देकर उदर भरते हैं।

केशव—धोके में न रहिये राव साहब ! दयानन्द साधारण सन्यासी नहीं हैं, पूर्ण योगी हैं। हम आखों देखी बताते हैं। इस महाशीतकाल में भी केवल एक कोपीन धारण कर गंगा की रेती में रात रात भर समाधि लगाते हैं।

राव - ऐसे ऐसे चमत्कार तो बहरूपिये भी दिखाते हैं।

केशव— आप ऐसे महात्मा को बहरूपिया बताते हैं। जिसके आगे बड़े बड़े कर्मकाण्डी विद्वान शीश नवाते हैं, जिसका उपदेश सुनकर लोग कण्ठी माला तोड़कर फेंक आते हैं। मूर्तियों को गंगा में बहाते हैं। उसे आप बहुरूपिया बताते हैं।

आज उनसा नहीं है पृथ्वी पर,
कोई भी वेद-धर्म का ज्ञाता।
पूण योगी तपस्वी उपदेशक,
और वेदों का शुद्ध व्याख्याता ॥

राव—गुरुदेव रंगाचारी के अतिरिक्त हम किसी की प्रशंसा नहीं सुनना चाहते।

केशव— श्री रंगाचारी को स्वामी दयानन्द के गुरु दण्डी विरजानन्द ने कई बार शास्त्रार्थ के लिए ललकारा।

राव— हा, हा, हा, कहां रंगाचारी और कहां 'अन्धा विरजा नन्द ! रंगाचारी वह हैं जिनके चारों ओर दिन में भी मशालें

जलती हैं।

केशव—विरजानन्द वह हैं जिनके अन्तस्तल में सज्ञाद्न की मशालें जलती हैं।

राव—खामोश ! तुम्हारे वेश का मान है – नहीं तो -(तलवार की मूठ पर हाथ धरना)

केशव—इतना अभिमान ?

राव—तलवार (के बल पर)

केशव—टूट जायेगी।

राव—कण्ठी तिलक छाप-

केशव—छूट जायेगी।

राव—ओह ! प्रहरियो। इन्हें यहां से टालदो। इलाके के बाहर निकाल दो।

केशव—आप कष्ट न करें। हम स्वयं ही जाते हैं। फिर भी जाने से पूर्व चेतावनी दिये जाते हैः—

उन्हें हेय साधू समझना नहीं।
वह योगी हैं उनसे उलझना नहीं॥
जो उलझोगे उनसे तो मिट जाओगे।
खुद अपनी ही चालों से पिट जाओगे॥

राव चेतावनी ! छोटा मुंह बड़ी बात। पं० नन्द राम जी !

नन्द—महाराज !

राव—धर्म प्रचार का कैसा विस्तार है ! क्या समाचार है ?

नन्द—केशवदेव ने ठीक कहा था। दयानन्द का काट करना सरल नहीं। उनके दर्शन के लिए भीड़ों पर भीड़ें टूटती हैं। लोग धड़ाधड़ मूर्ति पूजा से विमुख होते जाते हैं—एक निराकार का ध्यान लगाते हैं

राव—निराकार ! हा-हा, जिसका कोई आकार ही नहीं उसका ध्यान

कैसे लग सकता है।

नन्द- दयानन्द के प्रबल खण्डन ने लोगों का विश्वास हिला दिया है। वे पुराणों का व्यास-कृत होना नहीं मानते, मूर्ति-पूजा, शैव शाक्त और रामानुजादि वैष्णव सम्प्रदाय, तांत्रिक ग्रन्थ, वाममार्गादि, मदिरा भांग आदि मादक वस्तुयें, व्यभिचार, चोरी करना, छल कपट अभिमान झूंठ इत्यादि को अष्ट गप्पाष्टक बताते हैं। यही विज्ञापन सर्वत्र बंटवाते हैं।

राव– ओह इतना बढ़ गया ? रामानुजादि वैष्णव सम्प्रदाय को गप्प बताना, ठहर जा समझ लूंगा। पं० नन्द राम आप चासी में जाइये, खन्दोई ग्राम के जाटों और ठाकुरों को चक्राङ्कित कीजिये वैष्णव धर्म में दीक्षित कीजिये।

नन्द– आपकी आज्ञा शिरोधार्य है रावसाहब ! किन्तु जनता अब सरलता से वश में नहीं आयेगी। और एक बार धाक उखड़ी तो उखड़ती ही चली जायेगी।

राव—मैं अपने होते हुये वैष्णव धर्म का ही डङ्का बजाऊंगा, रङ्गाचारी के नाम का ही सिक्का चलाऊंगा।

नन्द—तो वैष्णव धर्म अपनाने वालों को–

राव—लगान में छूट दो।

नन्द - तन पर चक्र अंकित कराने वालों को–

राव—पक्के मकान बनाने की आज्ञा दो।

नन्द—दयानन्द का विरोध करने वालों को–

राव—बिना व्याज के ऋण दो। थैलियों का मुंह खोल दो। दयानन्द को परास्त करने वाले को रुपयों से तोल दो।

नन्द—बस तो—

किसी के रोके रुकेगा कभी यह काम नहीं।
बनालूँ सबको न वैष्णव तो नन्दराम नहीं॥ जाना)

भगवान—'अन्न दाता' अपराध क्षमा हो तो एक बात कहूं ?
राव— अवश्य- अवश्य ।
भगवान - नीतिकार ने कहा है- छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति । पात्र में छिद्र हो तो कितना ही भरो भर नहीं सकता ।
राव — तो क्या हमारे चक्राङ्कित धर्म में कोई न्यूनता है ?
भगवान—यह मैंने नहीं कहा । परन्तु लोग आक्षेप करते हैं कि राव साहब स्वयं तो चक्राङ्कित हैं– किन्तु उनके पुरोहित–
राव–– हमारे पुरोहित ?
भगवान—लोगों को बहकाते हैं-
एक— वैष्णव धर्म के विरुद्ध उकसाते हैं ।
दूसरा—वेद विरुद्ध बताते हैं ।
राव—अब समझा । प्रहरियों, पुरोहित जी को उपस्थित करो,
(प्रहरी जाते हैं पुरोहित जी को लाते हैं)
पुरोहित - आशीर्वाद 'अन्नदाता'
राव — चुप रहो, हम तुम्हारे आशीर्वाद के भूखे नहीं हैं । जब तक गुरुदेव रंगाचारी का वरदहस्त मेरे सिर पर है मुझे किसी के आशीर्वाद की आवश्यकता नहीं है ।
पुरोहित—ब्राह्मण के पास आशीर्वाद के सिवा और है ही क्या ?
राव— ब्राह्मण ? हमारा ही खाते हो हमीं पर गुराते हो, मुंह से हरि नाम सुनाते हो पीछे से छुरी चलाते हो । ब्राह्मण नाम को लजाते हो ।
पुरोहित—राव साहब, स्पष्ट बात कीजिये, व्याघात न कीजिये ।
जो आप राव हैं तो मैं भी हूं कोई रंक नहीं ।
मयङ्क आप हैं मैं भी कोई कलङ्क नहीं ॥
राव—आप वैष्णव धर्म को वेद विरुद्ध बताते हैं ? क्षीर सागर लक्ष्मी, शेष को मिथ्या बताते हैं ।

पुरोहित—जो बात जैसी है उसे वैसा ही बताना पाप नहीं। वेद में विष्णु का अर्थ संगठन है। क्षीर सागर का अर्थ उत्तम खेती और गौवंश की वृद्धि है। जिस राष्ट्र में होगी यह समृद्धि वहीं होगा लक्ष्मी का चमत्कार। शेष–अर्थात पूंजी पर ही है राष्ट्र का दारोमदार। यही है विष्णु अर्थात संगठन का शेष पर विहार। शंख, चक्र, गदा और पद्म हैं संगठन के चार अंग इस वेद मन्त्र में है अलङ्कार। अर्थों में स्वार्थियों ने कर दिया विकार—

राव—यह व्याख्यान दयानन्द की सभा में सुनाना। कहिए वैष्णव धर्म ?

पुरोहित—अस्वीकार।

राव—चक्राङ्कित बनने से ?

पुरोहित—इनकार।

राव—इनकार ? वैष्णव धर्म का यह तिरस्कार !

पुरोहित—आप क्षत्री हैं। क्षत्री का धर्म वेद गौ और ब्राह्मण की रक्षा करना है। ब्राह्मण का अपमान नहीं।

राव— कैसा ब्राह्मण ? आज ब्राह्मण पेट का दास बनकर पाचक, याचक और वाहक बन गया है–

पुरोहित—ब्राह्मण सदा से वाचक रहा है और वाचक ही रहेगा:–

जो क्षत्री शस्त्रधारी हैं तो ब्राह्मण शास्त्रधारी हैं।
जो क्षत्री छत्र धारी हैं तो ब्राह्मण छात्र धारी हैं॥

राव—ब्राह्मण और क्षत्री का वाद न उठाओ। चक्राङ्कित मत अपनाओ,

पुरोहित—कदापि नहीं–

श्रद्धा नहीं है मन में तनिक मूर्ति के लिए।
करता था पाप कर्म उदर- पूर्ति के लिए॥

राव—ओहो, यह ऐंठ यह घमण्ड, अभी यहीं तुम्हें चक्राङ्कित किया

जायेगा, वैष्णव-धर्म में दीक्षित किया जायेगा ।

पुरोहित—दबाते ब्राह्मण को आप हैं अधिकार के बल पर ।
कभी फैला न जग में धर्म है तलवार के बल पर ॥

राव—है कोई ! अभी इनके तन पर चक्र अंकित करो—

(दो भृत्यों का बलात चक्र अंकित करना, माला पहिनाना, तिलक लगाना)

पुरोहित—ओह !

सताकर ब्राह्मण को चैन जीवन में न पाओगे ।
इन्हीं नैनों से अपने रक्त के आंसू बहाओगें ॥

(बिजली कड़कना । बादल गरजना ।
राव का सिंहासन डोलना ।
सब का आश्चर्य
चकित रह
जाना)

प्रथम अङ्क

द्वितीय दृश्य

—:❀:—

स्थान—चासी ग्राम के बाहर

नन्दराम—वैष्णव बनो, वैष्णव बनो, वैष्णव बनो। क्यों; क्योंकि विष्णु सर्वव्यापक है वही सारे संसार को धारण करता है। समस्त प्राणियों का पालन पोषण करता है। इसलिये वैष्णव बनो।

ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना तो की, पर वे अब इतने बूढ़े हो गये हैं कि सृष्टि का चलाना उनके वश की बात नहीं। रह गये भोले बाबा शंकर जी वे तो बनी बनाई सृष्टि का संहार ही करना जानते हैं और कुछ नहीं। और विष्णु जी, विष्णु जी न हों तो संसार को भोजन भी ना मिले 'अच्छा-अच्छा' भोजन करना हो तो वैष्णव बनो। माल पुये और मोहन भोग उड़ाना हो तो वैष्णव बनो। लक्ष्मी का चमत्कार देखना हो तो वैष्णव बनो। जब जब संसार पर भीर पड़ती है तो सब देवता कानों में तेल डाल कर सो जाते हैं विष्णु जी ही भक्तों की टेर पर दौड़े हुये आते हैं और सृष्टि को बचाते हैं—इसलिये मैं कहता हूं कि सुरक्षित रहना हो तो वैष्णव बनो।

छत्रसिंह—(आकर) मिथ्या, मिथ्या, मिथ्या। सब मिथ्या विष्णु और शिव की कल्पना मिथ्या, जगत की सब वस्तुयें मिथ्या। पति पत्नी का नाता मिथ्या, पिता पुत्र का नाता मिथ्या। बड़े

बड़े उपदेशकों के उपदेश मिथ्या, बड़े बड़े अधिकारियों के आदेश मिथ्या, तिलक, छाप का वेष मिथ्या–

नन्दराम—अरे ओ मिथ्या वादी, तू कहां से आ टपका ?

छत्रसिंह—यह भी मिथ्या। मनुष्य उत्पन्न होता है। टपकता नहीं–

नन्दराम—यह तो बाल की खाल निकालता है–

छत्रसिंह—यह भी मिथ्या, बाल के खाल ही नहीं होती।

नन्दराम—अभी अभी तुम कह रहे थे कि जगत में जो वस्तुयें हैं वे मिथ्या तो जगत में तो ब्रह्म भी है – तो ब्रह्म भी मिथ्या–

छत्रसिंह—जगत में ब्रह्म है - यह मिथ्या। ब्रह्म में जगत है ऐसा बोलो।

नन्दराम—अच्छा मिथ्याराशी भाई जा, तू हमारे काम में क्यों विघ्न डालने आया है ?

छत्रसिंह—विघ्न डालना, यह मिथ्या - और मैं इसी लिए आया हूं यह भी मिथ्या–

नन्दराम—तो फिर तुम यहां किस लिए आये हो ?

छत्रसिंह—जिस लिए तुम आये हो।

नन्दराम—हम तो खन्दोई निवासियों को चक्राङ्कित बनाने आये हैं।

छत्रसिंह—यह भी मिथ्या। तुम तो भोले भाले लोगों को फांसकर पैसा कमाने आये हो।

नन्दराम—यह तो अच्छा पंजे झाड़कर पीछे पड़गया। (स्वगत) इसे टालना चाहिये नहीं तो यह बना बनाया काम बिगाड़ देगा। (प्रकट) अच्छा मिथ्यावादी जी आप क्या चाहते हैं ?

छत्रसिंह—मैं चाहता हूं "ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या" इसका प्रचार करो मैं नवीन वेदान्ती हूँ मेरे मत का विस्तार करो।

नन्दराम—अपना मुँह तो खोलो ! (छत्रसिंह मुँह खोलता है नन्दराम उनके मुँह में उंगली डालकर दांत गिनता है) छत्रसिंह

दांतों से उंगली पकड़ लेता है। नन्दराम यत्न से छुड़ाता है) अर र र र- - तुम तो बत्तीसे हो, वेदान्ती कैसे हुये ?

छत्रसिंह—वेदान्ती नहीं ? वेद भी अन्त नहीं पाते हैं जिसका—वह वेदान्त, उसका मानने वाला वेदान्ती।

नन्दराम—अच्छा वेदान्ती जी आप अपना मत चलाना चाहते हैं तो स्वामी दयानन्द के पास जाइये। ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या का वह बहुत सुन्दर निरुपण करते हैं।

छत्रसिंह—अच्छा। और तुम भी चलो।

नन्दराम—क्यों ?

छत्रसिंह—यों - कि वे चक्राङ्कितों का बड़ा सुन्दर विरूपण करते हैं।

नन्दराम—यह विरूपण क्या है ?

छत्रसिंह—निरूपण का भाई।

नन्दराम—दयानन्द चक्राङ्कितों की बुराई करता है। ऐसे पापी का मुंह देखना भी पाप है।

छत्रसिंह—यह भी मिथ्या। वह स्वयं कुछ नहीं करते। जो ब्रह्म कराता है सो करते हैं।

नन्दराम—अबे ब्रह्म के बच्चे -(धमकाने का अभिनय)

छत्रसिंह—यह भी मिथ्या। मैं तो स्वयम् ब्रह्म हूं ब्रह्म का बच्चा नहीं (जाना)

नन्दराम—झाड़ बनकर पीछे लगा था।

छत्रसिंह—(आकर) यह भी मिथ्या।

नन्दराम—हां - मिथ्या, मैं भी मिथ्या तू भी मिथ्या। जा भाई जा (छत्रसिंह का जाना) न जाने किसका मुंह देखा था कि यह माथा चाटने आगया।

छत्रसिंह—(फिर आकर) यह भी मिथ्या।

नन्दराम—अबे मिथ्या के बच्चे—तू जाता है कि नही। (धक्का देना छत्रसिंह का जाना) भई वाह सिर मुडाते ही ओले पड़े। आये थे पूजा को उपवास गले पड़ा।

(कुछ ग्रामीणों का आना)

ग्रामीण—पण्डित जी पालागन।

नन्दराम—चक्राङ्कित बनो, चक्राङ्कित बनो।

१ ग्रामीण—पण्डित जी, हमारे यहाँ तो कन्या का विवाह है।

नन्दराम—कन्या का विवाह है तो चक्राङ्कित बनो। चक्राङ्कित बनोगे तो कन्या का विवाह स्वयम् हो जायेगा।

१ ग्रामीण—पाँच सौ रुपया चाहिये।

नन्दराम—पाँच सौ रुपया चाहिये तो चक्राङ्कित बनो। चक्राङ्कित बनोगे तो पाँच सौ क्या पाँच सहस्त्र मिल जायेगा।

१ ग्रामीण—और ब्याज ?

नन्दराम—ब्याज की गाज से बचना हो तो चक्राङ्कित बनों।

१ ग्रामीण—अच्छा! तो हमें पांच सौ रुपया दिलवाईये और चक्राङ्कित बनाईये।

नन्दराम—पाँच सौ, पाँच सौ के लिये छै सौ का रुक्का लिखो!

२ ग्रामीण—आप सौ अधिक क्यों लिखाते हैं।

नन्दराम—क्योंकि हम वैकुण्ठ का टिकट जो दिलाते हैं। पर एक काम करना होगा इस दयानन्द को यहाँ से खदेड़ना होगा।

सब ग्रामीण—राम, राम, राम, (कानों पर हाथ धरकर) पण्डित जी यह तो हमारे बस को बात नही।

नन्दराम—जब वह उपदेश करे तो लड़कों से कहो कि उधर कुत्ते दौड़ा दें, देवी देवताओं की निन्दा करे तो गुठियाँ फिकवादें मूर्तिपूजा का खण्डन करे तो तालियाँ बजादें।

३ ग्रामीण—यह तो महापाप है।

१ ग्रामीण—अरे ठाकुर साहब, कन्या कारज देखें कि पाप देखें। अच्छा पण्डित जी लिखा पढ़ी करो।

नन्दराम—(बही में लिखता है) छै सौ रुपया कन्या कारज के लिए नगद ऋण लिया (सुनाकर) ठीक है। अच्छा तो अँगूठा लगाओ चौधरी साहब। (तीनों के अँगूठा लगवाना)

१ ग्रामीण—अच्छा महाराज तो अब रुपया दो।

नन्दराम—पहिले चक्राङ्कित बनो। माथे पर तिलक छाप लगाओ, ग्रीवा को माला से सजाओ और मुठ्ठे पर चक्र गुदवाओ। तो कैसे लगोगे।

२ ग्रामीण—पूरा बनमानस। अरे नहीं नहीं - भला मानस।

नन्दराम—जब धर्मराज के गण आयेंगे तो चक्राङ्कितों को सीधे बैकुण्ठ ले जायेंगे।

ग्रामीण—वाह! वाह!!

१ ग्रामीण—तो पण्डित जी, धर्मराज के गणों को इतना भी ज्ञान नहीं कि यह जान लें कि कौन कौन वैष्णव हैं?

नन्दराम—ज्ञान क्यों नहीं? पर जैसे बिना टिकट के यात्री को रेल से नीचे उतार देते हैं, बिना टिकट के लिफ़ाफ़े को फाड़ डालते हैं, वैसे ही जो चक्राङ्कित नहीं हैं उन्हें यहीं छोड़ जाते हैं।

३ ग्रामीण—तो क्या वहां बैरंग कोई नहीं जाता हैं?

नन्दराम—हाँ तो जाओ, सब को चक्राङ्कित बनाओ। जो चक्राङ्कित बने उन्हें लगान में छूट दी जायेगी। तिलक कण्ठी माला धारण करने वाले को पक्के घर बनाने की आज्ञा दी जायेगी।

३ ग्रामीण—और फाँस फाँस कर लाने वालों को।

नन्दराम—मिठाई खिलाई जायेगी, मुट्ठी गरम की जायेगी।

२ ग्रामीण—तो बस—हाथ मिलाओ। हमारा काम?

नन्दराम—लोगों को फांस फांस कर लाना। और हमारा काम—

२ ग्रामीण—रुपया देकर मुहर लगाना।

१ ग्रामीण—अच्छा पण्डित जी एक बात और बताओ। विष्णु लोक में क्या क्या है यह भी समझाओ।

नन्दराम—सुनो– विष्णु जी क्षीर सागर में निवास करते हैं। शेष की शैया बना कर विहार करते हैं। लक्ष्मी जी चरण दबाती हैं सुदर्शन चँवर डुलाते हैं।

१ ग्रामीण—तब तो क्षीर सागर में खूब नहायेंगे। दूध पी पी कर मुटायेंगे, दही जमायेंगे, ताजा ताजा मक्खन खायेंगे।

२ ग्रामीण—शेष जी से यहां के सांपों के नाम चिट्ठी लिखायेंगे तो पृथ्वी के सांप हमारी सन्तान को काटने न आयेंगे।

३ ग्रामीण—लक्ष्मी जी से गहने ले लेकर अपनी अपनी स्त्रियों को भिजवायेंगे। मुहरें ले लेकर अपने अपने घरों व खेतों पर बरसायेंगे।

नन्दराम—लो कण्ठी पहनों। (सब को पहिनाना) माला पहनो। (सब को पहिनाना) तिलक लगाओ छाप बनाओ (बनाना) अब सीधे बैकुण्ठ को चले जाओ।

१ ग्रामीण—रुपया तो दिलवाओ।

नन्दराम—गंगा जी में मुंह धो आओ। (जाने लगता है)

१ ग्रामीण—धोके बाज़ ऋणदाता, कहां भागा जाता, छीन लो बही खाता।

(बही खाता छीनने के लिए पकड़ लेते हैं)

२ ग्रामीण—सरासर बेईमानी, अंगूठे की ले ली निशानी, रुपया देने में आना कानी।

३ ग्रामीण—ले चलो थाने।

(नन्द राम का भाग जाना। सब का आश्चर्य में रह जाना)

गाना

यह पूरा घाघ निकला, बिकराल बाघ निकला ।
जहरीला नाग निकला, भीतर से आग निकला ॥
क्या खोटा भाग निकला बेलाग भाग निकला ।
समझे थे हंस जिसको वह काला नाग निकला ॥
अन्धेर है अन्याय है यह घोर अनाचार ।
यह धर्म का प्रचार है या खुली लूटमार ॥
ये बेईमान धर्म के बनते हैं ठेकेदार ।
मुंह पै है रामनाम बगल में छिपी कटार ॥
क्या देखते हो यारो पकड़ों और मारो मारो ।
डण्डों से कर मरमम्मत अच्छी तरह संवारों ॥

प्रथम अङ्क

तृतीय दृश्य

—:❀:—

"रामघाट"

(गंगा की पुलिन पर योगिराज दयानन्द पद्मासन लगाये बैठे हैं।
पं० टीका राम का सामने से बिना नमो नारायण
किये हुये चला जाना। ब्रह्मचारी
केशवदेव का पं० टीकाराम
के साथ आना)

केशव— हुआ किस तरह शिष्टाचार का यह आज उल्लंघन।
किया योगेश्वर को तुमने अभिवादन न अभिनन्दन॥
टीकाराम--हुआ वास्तव में यह अपराध पश्चात्ताप है मुझको।
चलो चल कर क्षमा माँगू बहुत सन्ताप है मुझको॥
(आगे बढ़कर स्वामी जी के निकट जाकर)

दोनों— नमस्तेस्तु भगवन !
स्वामी जी–कोऽसि ?
टीकाराम–ब्राह्मणोऽस्मि !
स्वामी जी–अपि जानासि सन्ध्यां सावित्रीं च ?
टीकाराम–सम्पूर्ण सन्ध्यां तु नाहंजानामि। परन्तु गायत्री कण्ठाग्रास्ति।
स्वामी जी–तर्हि श्रावय।
टीकाराम किसी के आगे गायत्री पाठ करना गुरु ने विविर्जित किया है।

स्वामी जी—भद्र! परिव्राज ब्राह्मणनामपि गुरु। अतः मम सम्मुखे पाठने सङ्कोचं मा कार्षी।

केशव— महात्मा जी ठीक कहते हैं।

टीकाराम—ऐसा है तो सुनिये। ओ३म भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात्।

स्वामीजी—अतीव सुष्ठुर्वर्त्तते। अहम् त्वाम हस्तलिखितम सन्ध्या पुस्तिका ददामि।

उस निराकार परमेश्वर की
मन मन्दिर में महिमा पूजो।
सुषुमा पूजो प्रतिभा पूजो
पर कभी नहीं प्रतिमा पूजो॥

टीकाराम—यह कण्ठी तिलक छाप—

स्वामी जी—अज्ञानता का अभिशाप—

टीकाराम—द्विविधा में पड़ गया। साकार को तजता हूं तो जींविका जाये निराकार को भजता हूं तो जीव भरमाये।

स्वामीजी—मनन और विचार करो। आत्म चिन्तन करो। निराकर ही में चित्त को प्रवृत करो शङ्काओं को यहां आकर निवृत करो

टीकाराम—उपकार! महान उपकार!!

कल्याण मार्ग बतलाया है दें शरण मुझे इन चरणों में।
(पैर छूने बढ़ते हैं। स्वामीजी रोक कर)

स्वामी जी—इन चरणों में है धूल भरी कल्याण है सत्याचरणों में॥

(दोनों का जाना। स्वामी जी का समाधिस्थ हो जाना। ब्रह्मचारी खेमकरण का एक घोड़े पर मूर्तियाँ लादे हुये आना)

क्षेमकरण—अहोभाग्य! सम्मुख महात्मा विराजमान हैं। समाधिस्थ हैं। इस शीत काल में बिना वस्त्र धारण किये—मौन लिए,

(स्वामी जी का आसन ऊपर उठजाना) चमत्कार ! योग का चमत्कार हैं !! योग का चमत्कार कि योगी का चमत्कार। चलूं—श्री मुख से सदोपदेश सुनूं। कैसे सम्बोधन करूं ? किस प्रकार अभिवादन करूं। हां—ठीक है - अच्छा याद आया (गाकर) "ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिना।

स्वामी जी–"हूं" (आंखें खोलते हैं क्षेमकरण अभिवादन करता है) भद्र ! अभी क्या गुनगुनाया ? 'पश्यन्ति यं योगिना उस पार ब्रह्म को कौन देखता है ?

क्षेमकरण—योगी !

स्वामी जी–तब योग का साधन करो। मन में ईश्वर का आराधन करो

क्षेमकरण—यही तो करते हैं। इस घोटक पर तेंतीस करोड़ देवताओं की प्रतिमायें है पौने सैंतीस सेर बोझ है। यह देखिये शङ्कर, यह रहीं दुर्गा—यह रहे भैरव, हनुमान, विष्णु, लक्ष्मी। जहां इच्छा हुई घोड़ा रोक लिया। जिस देवता का चाहा पूजन कर लिया।

स्वामी जी–घोड़ा क्या है—चलता फिरता देवालय है। ब्रह्मचारी देवता तेंतीस कोटि हैं तेंतीस करोड़ नहीं।

क्षेमकरण—कौन कौन से ?

स्वामी जी–आठ वसु, जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु, आकाश, रवि, शशि, और नक्षत्र। ग्यारह रुद्र हैं—प्राण, अपान, व्यान, समान, नाग कूर्म, कुक्कल, देवदत्त धनञ्जय और जीवात्मा। बारह आदित्य, मीन, मेष, मकर, कुम्भ, कन्या, तुला, मिथुन, कर्क सिंह, वृश्चिक, धन, वृष। इकत्तीस हुये-इनके अतिरिक्त इन्द्र विद्युत ऐश्वर्यादि और प्रजापति अर्थात कला कौशल विद्वानों का सत्कार। ये तेंतीस देवता है। सच्चिदानन्द

स्वरूप परमात्मा ही उपास्य है उसी की उपासना किया करो।

क्षेमकरण--तो क्या वह पार ब्रह्म इन प्रतिमाओं में नहीं हैं ?

स्वामीजी--है ! पर यह प्रतिमायें तो पार ब्रह्म नहीं हैं। परमात्मा सर्व-व्यापक है वह हृदय-मन्दिर में विराजमान हैं। वहीं उसे खोजो, वहीं ध्यान लगाओ।

यह भार लिये क्यों फिरते हो ?
यह भार न पार लगायेगा।
भव सागर में यदि भार सहित
उतरे तो भार डुबायेगा॥

क्षेमकरण—उपकार ! उपकार योगीराज महान उपकार !!

आज सच्चिदानन्द का
ज्ञान हो गया प्राप्त।
इन जड़ देवों का
किया पूजन यहीं समाप्त॥

(कृष्णानन्द शास्त्री के साथ कई सज्जनों का आना)

एक— (कृष्णानन्द से) आप शास्त्रज्ञ हैं तो इनसे शास्त्रार्थ करो, इन्हें पराजित करके हिन्दू धर्म की टेक रखो।

न यह मूर्ति पूजा न अवतार मानें,
तिलक छाप कण्ठी अनर्गल बखानें।
पुराणों का माख़ौल हैं यह उड़ाते,
यह सब देवताओं को पत्थर बताते॥

कृष्णानन्द—ऐसे ढोंगिये से जो हरि निन्दा करता है बात करना भी पाप है।

दूसरा— बात करने से कतराओ नहीं। शास्त्रार्थ करो। यह ढोंगिये हैं तो इनका ढोंग सिद्ध करो अन्यथा इनका मत स्वीकार करो।

एक— अजी—यह ऐसे शास्त्रार्थ नहीं करेंगे। (स्वगत) मैं अभी उलझाये देता हूं। (कृष्णानन्द से) कहिये—महादेव पर जल चढ़ा आऊँ ?

स्वामी जी—यहां महादेव नहीं, पत्थर है। महादेव तो कैलास पर हैं।

कृष्णानन्द—क्या—महादेव यहाँ नहीं ?

स्वामी जी–निराकार महादेव तो सर्वव्यापक है। यहां भी है—फिर मन्दिर में जाना व्यर्थ है।

कृष्णानन्द–अभी कुछ पढ़ो तब उपदेश करो। यों ही भोले भाले जनों को मत छलो। जो निराकार है वही धर्म की ग्लानि हो जाने पर पुनः धर्म के संस्थापन हेतु साकार हो जाता है। यही गीता का श्लोक बताता है:—

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानाय धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्॥

स्वामी जी–ईश्वर देह धारण नहीं करता। देह धारण करना जीवात्मा का धर्म है।

कृष्णानन्द–यदा – यदा,

स्वामी जी–इस श्लोक को बार बार क्या दुहराते हो ? ईश्वर देह धारण करता है इस पर वेद का प्रमाण दो।

(कृष्णानन्द के मुंह में झाग आजाते हैं वह श्रोताओं की ओर देखने लगते हैं)

स्वामी जी–आप श्रोताओं की ओर क्या देखते हैं। मेरी ओर मुख करके बात कीजिये।

कृष्णानन्द–(विक्षिप्तसा) गंधवती पृथ्वी, धूमवान अग्नि।

स्वामी जी–प्रसंग पर रहिये। न्याय का विषय न उठाइये, ईश्वर देह धारण करता है वेद से बताइये।

कृष्णानन्द–लक्षण का भी लक्षण होता है।

स्वामी जी–लक्ष्य का लक्षण होता है। लक्षण का लक्षण नहीं। गेहूं का आटा होता है। आटे का आटा नहीं।

(श्रोतागण का हंसना कृष्णानन्द का उठ कर भाग जाना)

क्षेमकरण—समझ गया, अच्छी तरह समझ गया।

जिस का कोई आकार नहीं,
तो फिर उसकी प्रतिमा कैसी ?
यह ब्रह्म नहीं है पत्थर है,
तो पत्थर की महिमा कैसी ?

सब— ठीक कहते हो ब्रह्मचारी जी,
क्यों बोझ उठाये फिरते हो,
यह छाप लगाये फिरते हो ?
इन काष्ठ और पाषाणों में,
क्यों नित भरमाये फिरते हो ?

क्षेमकरण— इस भव सागर से तरने को
यह भार हटाये देता हूं।
पाहन प्रतिमा गंगा जी में
सब आज बहाये देता हूं।।

(घोड़े पर से मूर्तियों को उठाकर गंगा में बहाने को जाना)

सब— सच्चिदानन्द परमात्मा की जय। कल्पित मतमतान्तरों की क्षय।

(यवनिका पात)

प्रथम अङ्क
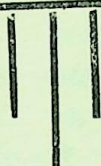
चतुर्थ दृश्य

—:※:—

"कर्णवास"

टीकाराम –(आकर) जो निराकार है वह साकार नहीं हो सकता। जो सर्वव्यापक है वह एक देशी नहीं हो सकता। अब तक पाषाण-मूर्तियों से सर मारा। पत्र पुष्प चढ़ाया, भोग लगाया, पर सब को स्वामी दयानन्द ने व्यर्थ बताया, सच्चिदानन्द परमात्मा पर विश्वास जमाया। इसलिए आज से कण्ठी माला तोड़ी, मूर्तिपूजा छोड़ी।

(मूर्तियों को उठाकर गंगा में फेंकने जाते हैं)

गोपालसिंह–(आकर) हैं-हैं, पुरोहित जी,
नहीं आते हो करने आज[illegible]ऊ,
मन्दिर में पूजन क्यों ?
अजी गंगा में करते देव,
प्रतिमायें विसर्जन क्यों ?

टीकाराम--भाई ! मेरा मत परिवर्तित हो गया है मैं अब आपके मंदिर में पूजा नहीं कर सकता।

गोपाल— क्यों—क्या हम से कोई अपराध हो गया है ?

टीकाराम– नहीं—मुझ पर योगिराज दयानन्द का रंग चढ़ गया है। वे मूर्ति पूजा अवतार, तीर्थ, कण्ठी, माला, तिलक छाप भागवत आदि का खण्डन करते हैं।

गोपाल— खण्डन ?

टीकाराम–हाँ ! निराकार ईश्वर की उपासना, संध्या गायत्री वलि वैश्य देव यज्ञ पर बल देते हैं ।

गोपाल— प्रतिमा पूजन तो साधन है—

टीकाराम--तो मानो प्रतिमा साध्य नहीं ।

गोपाल— उसके द्वारा आराधन है—

टीकाराम--पर प्रतिमा तो आराध्य नहीं ॥

गोपाल— हे विप्र ! तुम्हारी बातें सुन,
हमको होता अति विस्मय है ।
तुम त्याग चुके प्रतिमा पूजन,
हमको भी होता संशय है ॥

मुकन्दसिंह— छुड़वाया प्रतिमा का पूजन
तुडवाया जिसने कण्ठा है ।
उन योगोवर के दर्शन की
हमको उत्कट उत्कण्ठा है ॥

टीकाराम--मैं स्वयं जाता हूं । उन्हें सादर लिवाये लाता हू । (जाना)

पुरोहित–(आकर) जिनके चासी और राम घाट
आदिक में जय जय कारे हैं ।
वह कर्णवास में दयानन्द
योगेश्वर आज पधारे हैं ॥

गोपाल—(हर्ष से)

परम सौभाग्य है अपना वह
शुभ दिन शुभ समाँ आया ।
बुझाने प्यास प्यासों के
यहाँ उठ कर कुआं आया ॥

(प्लाट फटना। गंगा तट पर वसेंदु वृक्ष के नीचे स्वामी दयानन्द पद्मासन लगाये सुशोभित है)

सब— योगिराज दयानन्द की जय, जो बोले सो........

भगवान—(आकर) क्षय ।

गोपाल— यह कैसा अलाप ? भक्त मण्डली को शाप ।

भगवान—जो तुम्हारे धर्म कर्म की जड़ खोद रहा है तुम उसकी जय बोलते हो अपने हाथों अपने पांवों में कुल्हाड़ी मारते हो ।

पुराणों तीर्थो कण्ठे का,
मूलोच्छेद करते हैं ।
यह जिस पत्तल में खाते हैं,
उसी में छेद करते हैं ॥
लड़ाकर हिन्दुओं को उनमें
यह मत भेद करते हैं ।
मगर निज दुर्दशा पर कब,
ये हिन्दू खेद करते हैं ॥
उन्हीं की बोलते हैं जय,
जो कुल्हाडे चलाते हैं ।
हमारा अन्न खाकर गीत,
यह औरों के गाते हैं ॥

गोपाल भगवानदास, मुंह संभालो। महात्मा के लिए दुर्वाक्य न निकालो। साहस हो तो शास्त्रार्थ करा लो ।

भगवान—हाँ यही होगा:—

रहते अनूप शहर में विद्वान पर्वती ।
आते हैं शास्त्रार्थ को श्री अम्बादत्त जी ॥

(पं० अम्बादत्त का बहुत से मनुष्यों के साथ आना)

क्यों—अब मौन क्यों हो। अब बोलो। अब प्रतिमा—पूजन के विरुद्ध मुंह खोलो।

अम्बादत्त–शान्त, पं० भगवान दास जी शान्त ! यह शास्त्र चर्चा है। शान्ति से सुनो। क्रोध करने से कुछ प्राप्त न होगा। (स्वामी जी से) कहिये भगवन, आप प्रश्न करेंगे या मैं आरम्भ करूं।

स्वामी जी–भद्र पुरुषों, मुझे किसी से वैर नहीं किसी से द्वेष नहीं। मैं महान आर्य जाति का पतन देखकर कुढ़ता हूं। जगतगुरु भारत को अज्ञान गर्त में पड़ा देखकर दुखी होता हूं।

साधना घटी साध ना बढ़ी,
साधुता घटी स्वादुता बढ़ी।
सम्पदा घटी आपदा बढ़ी,
वेदता घटी वेदना बढ़ी॥
याजना घटी याचना बढ़ी,
दानता घटी दासता बढ़ी।
सत्यता घटी स्वार्थता बढ़ी,
योग्यता घटी धूर्त्तता बढ़ी॥
इस घटा बढ़ी में वेद ज्ञान,
पृथ्वी से उठता जाता है।
बस मेरे मन को अष्टयाम,
यह ही सन्ताप सताता है॥

इसीलिये मैं विद्वानों से शास्त्र चर्चा करता हूं। हार जीत का विचार नहीं। शुद्ध सनातन वैदिक धर्म में मिलावट और बनावट ही हमारी गिरावट का कारण बन गई है उसे दूर करना चहता हूं। (पं० जी से) मूर्तिपूजा का वेद से प्रमाण दें:—

अम्बादत्त—और—

स्वामी जी–अवतार-वाद वेद से सिद्ध करें।

अम्बादत्त–सज्जनों, कहिये तो शास्त्र-चर्चा को दिनों चलाऊं ? या
मूर्ति-पूजा और अवतार वाद पर अपना मत सुनाऊं:—

वेद में तो मूर्ति-पूजा का
कहीं वर्णन नहीं।
वेद में कण्ठी तिलक,
माला का प्रतिपादन नहीं॥

गोपाल— बोलो वैदिक धर्म की जय। योगेश्वर दयानन्द की जय।

अम्बादत्त— रम रहा सर्वत्र है वह,
आये क्यों एक देश में।
सच्चिदानन्द देह धर क्योंकर,
फंसेगा क्लेश में॥

गोपाल— वैदिक धर्म की जय, योगिराज—

स्वामी जी–मेरी नहीं, पं० अम्बादत्त जी की जय बोलो।
यह सच्चे ब्राह्मण हैं सत्यवक्ता हैं धुरन्धर हैं।
तपस्वी धर्म ज्ञाता वेद के मर्मज्ञ सुख कर हैं॥

भगवान—लुटिया डुबादी।
हम जिन्हें समझते थे रक्षक,
वे खेतों के भक्षक निकले।
हम जिनको शेष समझते थे,
वे छिपे हुये तक्षक निकले॥

(कुछ सोचकर) प्रसिद्ध विद्वान हीरा वल्लभ जी को लाऊंगा
उन्हें ऋगवेद और यजुर्वेद कण्ठ है। उनसे शास्त्रार्थ
कराऊंगा। (जाना)

धर्म सिंह—(आगे बढ़ कर) बडगूजर वंशोत्पन्नोहम् धर्म सिंह श्री

चरणौ नमामि ।

स्वामी जी–यशस्वी भव ।

गोपाल— भगवन ! आपने हमारे पुरोहित पं० टीकाराम जी का तो उद्धार किया । परन्तु अभी तक हमारा क्यों न सुधार किया ?

अज्ञानी हैं पशुवत हैं हम,
भगवन सब का उद्धार करो ।
समझाओ हमको धर्म तत्व,
इतना हम पर उपकार करो ॥

स्वामी जी–धर्मज्ञान का केवल वही अधिकारी है जो यज्ञोपवीत धारी है।

गोपाल— महाराज, दाढ़ी मूंछ निकल आने पर भी अभी तक हमारा यज्ञोपवीत नहीं हुआ । कुल की परम्परा ही ऐसी है ।

स्वामी जी–शोक ! यह दुराचार हमारे पंडितों पुरोहितों ने फैलाया है । वेद मार्ग से यजमानों को भटकाया है ।

गोपाल— क्या अब भी कोई उपचार हो सकता है । हमें यज्ञोपवीत का अधिकार हो सकता है ।

स्वामी जी–क्यों नहीं–अभी यज्ञ का विधान करो । समुचित अनुष्ठान करो । मैं अपने हाथ से सब को यज्ञोपवीत पहिनाऊंगा । गायत्री सिखाऊंगा ।

गोपाल— जो आज्ञा । पं० टीका राम जी, यज्ञ का सामान कीजिये ।

टीकाराम—भगवन ! वैदिक यज्ञ का हमको ज्ञान नहीं । वैसे आप कहें तो हम विधान करें ।

स्वामी जी–आज तुम्हें जैसे आता है–करो । अबकी बार जब हम आयेंगे तो विधिवत यज्ञ करायेंगे ।

(पं० टीकाराम यज्ञ कुण्ड, समिधायें, कपूर, कलश आदि लाते हैं । अग्नि, प्रज्वलित करना)

टीकाराम–(चमचे में कपूर रखकर जलाकर) ओ३म भुर्भुवः स्वः ।

ओ३म भूर्भुवः स्वर्द्यौरिवभूम्ना पृथ्वी बव्वारिम्णा तस्यास्ते पृथ्वी देव यजनि पृष्ठे अग्निर्मन्नाद्या मन्ना द्याया दधे ।

(अग्नि का यज्ञ कुण्ड में प्रवेश करना)

स्वामी जी–अब प्रायश्चित्त आहुति दिलवाओ ।

(पं० टीकाराम सब के हाथों में घृत में भीगी हुई समिधायें देते हैं।)

टीकाराम—यदस्य कर्मणोत्थरी रिचम यद्वा न्यून मिहाकरम अग्नि स्विष्ट कृत विद्यात्सर्वं सुहुतं करोतुमे । अग्नये स्विष्ट कृते सुहुत हुते सर्वं प्रायश्चित्ताहुतिनां कामनाँ समर्धय स्वाहा । इदमग्ने स्विष्टकृते इदन्नमम । (सब समिधायें चढ़ाते हैं)

स्वामी जी–अब सब के हाथों में यज्ञोपवीत दीजिये ।

(पं टीकाराम सब के हाथों में यज्ञोपवीत देते हैं) यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेरियत सहजं पुरस्तात । (सब दुहराते हैं) आयुष्यमुग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं (सब दुहराते हैं) यज्ञोपवीतम बलमस्तु तेजा । यज्ञोपवीत मसि अथवा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि । (सब दोहराते हैं) यज्ञोपवीत परम पवित्र है । परमात्मा से सहज में साक्षात कराता है, आयु को बढ़ाता है बल और तेज दिलाता है । शुभ्र है । (सब जन जनेऊ पहिनते हैं)

सब— धन्य है ।

स्वामी जी–अब एकाग्रचित्त होकर बैठो । परमेश्वर का स्मरण करो, गायत्री का उच्चारण करो । ओ३म् भूर्भुवः स्वः (सब दुहराते हैं) तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न. प्रचोदयात् (टुकड़ों में दुहरवाते हैं)

गोपाल— धन्य भाग्य, आज द्विज कहलाने के अधिकारी हुये । मनुष्य योनि में जन्म लेना सार्थक हुआ :—

धन धान धरा धाम धेनु धाय धात धाक,
दिये सब विधाता ने बाग और बागे हैं ।
धागे बिन अभागे सो जगह जगह भागे,
रात रात भर जागे ठगियों ने ठागे हैं ॥
रागी मिले त्यागी मिले औघड़ बैरागी मिले,
जोगी मिले सन्त मिले कान फटे नागे हैं ।
भाग्य आज जागे ऋषिराज अनुरागे घर-
बैठे बिन मांगे मिले तान तीन तागे हैं ॥

धुनिया— महाराज यह तो ऊंचे वर्ण के हैं। इन्हें तो जिनेऊ मिल गया मैं अपढ़ अबोध धुनिया हूँ—मेरी सद्गति कैसे होगी ?

स्वामी जी—भक्त ! सद्गति सत्कर्मों से होती है। 'अच्छे कर्म करो।' जितनी रुई लो उतनी ही वापिस करो। तुम्हारे लिए यही पर्य्याप्त है। 'ओ३म्' का जाप करो।

धुनिया— जो आज्ञा महाराज ! (चरण छूना)

छत्र सिंह—(आकर) मिथ्या, मिथ्या, मिथ्या, यज्ञ मिथ्या, यज्ञोपवीत मिथ्या।

स्वामी जी—अरे सब मिथ्या ही मिथ्या है या कुछ सत्य भी है ?

छत्र सिंह—"ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या",

स्वामी जी—यह जगत पंचभूत से बना है जो अनादि अनन्त हैं। इसे मिथ्या कैसे बताते हो ?

छत्र सिंह—यह जगत तो रज्जु-सर्प के समान है ।

स्वामी जी–अच्छा मान लिया, तो वास्तिवक सर्प पहिले से विद्यमान है।
छत्र सिंह–हाँ–है।
स्वामी जी–तभी तो रज्जु में सर्प की कल्पना हुई।
छत्र सिंह—निःसन्देह।
स्वामी जी–तो प्रियवर ! वह असली जगत कौन सा है ?
छत्र सिंह–कौन सा है ? कौन सा है ? वह तो ब्रह्म में समाया हुआ है।
स्वामी जी–ब्रह्म में तो यह जगत भी समाया हुआ है।
छत्र सिंह—हाँ समाया हुआ तो है। परन्तु यह जगत है मिथ्या ही।
स्वामी जी–'अच्छा ब्रह्म जी,। 'आप ब्रह्म हैं–ब्रह्म का काम सृष्टि उत्पादन करना है।
छत्र सिंह—है।
स्वामी जी–तो ब्रह्म जी इस मरी हुई मक्खी को जीवित कर दीजिये।
छत्र सिंह—परन्तु यह तो जगत में है। इसलिए यह भी मिथ्या है।
स्वामी जी–'अरे मतिमन्द' ! (कपोल पर चपत जमा कर)
छत्र सिंह–यह क्या महाराज ! मैं 'आपका मान करता हूँ–आपसे प्रेम करता हूँ तो मुझे तर्क से समझाइये। मतभेद से चिढ़कर हाथ न चलाइये।
स्वामी जी–चौधरी जी जब जगत मिथ्या है। तो ब्रह्म ही ब्रह्म रह जाता है। आपके कथनानुसार आप भी ब्रह्म हैं और मैं भी ब्रह्म हूँ। तो ब्रह्म ने ब्रह्म के चपत लगाया इसमें रोष क्यों आया ?
छत्र सिंह—सत्य है सत्य है। अब समझ में आया।

कालिमायें आज मेरे-
मन की सारी धुल गईं।
हट गया अज्ञान पट,
भीतर की आंखें खुल गईं॥

(चरण छूना) वेदान्तवाद अनुभव हीन चौडाहे मनुष्य की बड़बड़ाहट है। (जाना)

गोपाल— भगवन, अपराध क्षमा हो तो विनती करूँ ?

स्वामी जी–कहो ।

गोपाल— हंसा कुंवर ५-६ ग्रामों की स्वामिनी है। मेरी ताई है। बाल विधवा है। संयम से जीवन बिताती है। जौ की रोटी और मूंग की दाल अपने हाथ से बनाकर खाती है। श्री चरणों में उपस्थित होने की अनुमति चाहती है।

स्वामी जी–ठाकुर जी—मैं स्त्रियों को निकट नहीं आने देता हूँ। न उन्हें उपदेश देता हूँ।

गोपाल— वह तो ९० वर्ष की वृद्धा है।

स्वामी जी–ऐसा है। (सोचकर) बुला लो। (संकेत कर) वहां बिठादो। (गोपाल सिंह जाकर हंसा को लाते हैं)

(नेपथ्य में)

हंसा— योगी जी, आपके उपदेशों से परिवार के पुरुषों में आश्चर्य-जनक परिवर्तन देखा। इसी लिए मेरे मन में भी आया कि मैं भी सदुपदेश ग्रहण करूँ। शिष्या बनूँ।

स्वामी जी–माता जी! वह पारब्रह्म ही तुम्हारा गुरु है। उसके मुख्य नाम 'ओ३म्' का जाप करो। मूर्त्ति पूजा छोड़कर शेष जीवन में गायत्री का जाप करो। लो इस पत्रे पर गायत्री लिखी है। यह "गुरुमंत्र" है। यही मेरा आदेश है। ओ३म् नमो परमेश्वराय सच्चिदानन्द स्वरूपाय सर्वगुरुवे नमः यही मेरा उपदेश है।

हंसा— धन्य है–धन्य है। अहो भाग्य! कुछ दान दक्षिणा—

स्वामी जी–बस कृपा। अपने पुरोहित प० टीकाराम को पूर्ण विद्वान बनाओ। मथुरा में गुरुदेव विरजा नन्द के विद्यालय में

अपने व्यय से पढ़ाओ। जाओ—
मातृशक्ति तुझे कोटिशः नमस्कार है।

नेपथ्य में— बोलो—कृष्ण बलदेव की जय। शङ्कर भगवान की जय।
(शङ्ख घण्टा घड़ियाल बजाते हुये प० हीरा वल्लभ—भगवान दास आदि का आना। सिंहासन पर मूर्त्तियां लाना। सब का यथास्थान बैठ जाना)

हीरावल्लभ— मंगलमम् भगवान विष्णुं, मंगलम् गरुडध्वजा।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षम् मंगलायतनुहरि॥
(आरती जलाकर) शान्ताकारं भुजग शयनम पद्मनामं सुरेशं विश्वाधारंमं गगन सदृशम् मेघ वर्णं शुभाङ्गं। लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगभिध्यान गमनम। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्व लोकैक नाथम। (जल लेकर सब पर छिड़कना) हरि ओ३म् विष्णुर्विष्णु, विश्वे देव तिलकं अर्थ धर्म कामात्सि-द्धयेत। लीजिये, स्वामी जी, भगवान की आरती उतारिये।

स्वामी जी—शास्त्रार्थ कीजिये, खिलवाड़ नहीं—
पाषाण की प्रतिमा है यह भगवान नहीं है।
पाषाण और भगवान का भी ज्ञान नहीं है॥

हीरावल्लभ—है—ज्ञान है। परन्तु निश्चय कर लीजिये। यदि मैं परा-जित हुआ तो आपका मत स्वीकार कर लूंगा और आप पराजित हुये तो मेरा मत स्वीकार करलेंगे।

स्वामी जी—स्वीकार !

टीकाराम— यह तो (स्वामी जी को बताकर) साक्षात रुद्र हैं। हारने की घड़ी ही में उत्पन्न नहीं हुये हैं।

हीरावल्लभ—सब ज्ञात हो जायेगा।
इन्हीं के हाथ से प्रतिमाओं को पुजवा के उठूंगा।
इन्हीं से भोग इन प्रतिमाओं को लगवा के उठूंगा॥

टीकाराम—जो गरजते हैं बरसते नहीं।

स्वामी जी— श्री पंडित हीरावल्लभ जी,
वह मंत्र कीजिये उच्चारण।
जो कहता है वह पारब्रह्म,
करता शरीर भी है धारण॥

हीरावल्लभ— वेदों में कोई मंत्र नहीं, ।
पर यह गीता में आता है।
जब ग्लानि धर्म की होती है,
वह ब्रह्म बचाने आता है॥

स्वामी जी— श्री कृष्णचन्द्र योगेश्वर थे,
योगेश्वर ने बतलाया है।
योगी धर्म—संस्थापन हित,
परिवर्तित करता काया है॥

हीरावल्लभ— उस योगी के तन मन में रम,
वह ब्रह्म कार्य करवाता है।
बस इसी तरह वह निराकार,
साकार रूप होजाता है॥

स्वामी जी— वह सर्व-व्यापक योगी के,
तन में किस भाँति समायेगा।
जो है अनन्त वह छोटे से,
तन में किस भाँति समायेगा॥

हीरावल्लभ— इस विधि से यह तो सिद्ध हुआ,
लेते हैं प्रभु अवतार नहीं।
वह निराकार और निर्विकार,
हो सकता है साकार नहीं॥

सब— बोलो वैदिक धर्म की जय!

हीरावल्लभ—यह तो अच्छा आपने प्रकट किया है भेद ।
स्वामी जी—प्रतिमा पूजन पर कहो क्या कहता है वेद !!
हीरावल्लभ—प्रतिमा पूजन तो साधन है—
स्वामी जी—तो मानो, प्रतिमा साध्य नहीं ।
हीरावल्लभ—उसके द्वारा आराधन है—
स्वामी जी—पर प्रतिमा तो आराध्य नहीं ॥

मूर्त्ति उपासक आप हैं विद्वद्वर्य प्रसिद्ध ।
प्रतिमा पूजन कीजिये आप युक्ति से सिद्ध ॥

हीरावल्लभ— है प्रतिमा पूजन का विधान,
यह यजुर्वेद में लिक्खा है ।
वह महद्यशः प्रभु है नतस्य,
उसकी तो होती प्रतिमा है ॥

स्वामी जी—वह प्रतिमा आप दिखायें तो—है कहाँ, बनाई है किसने ?
हीरावल्लभ—प्रतिमायें बनवाईं उसने देवालय बनवाये जिसने ॥
स्वामी जी— तो प्रतिमाओं का निर्माता मानव है वह भगवान नहीं ।
हीरावल्लभ—निश्चय ही अपनी प्रतिमा का वह कर सकता निर्माण नहीं ॥
स्वामी जी— हे विद्वद्वर ! आप हैं ज्ञानी और समर्थ ।
यजुर्वेद के मंत्र का किया न सम्यक् अर्थ ॥

हीरावल्लभ— जो झुकता है उसको 'नतस्य',
वैयाकरणी बतलाते हैं ।
झुकता है वह जो जन्म धरे,
ऐसा वह अर्थ लगाते हैं ॥

स्वामी जी— 'न' भी उदात्त 'त' भी उदात्त,
दोनों अक्षर हैं पृथक पृथक ।

हैं 'न' के अर्थ 'नहीं'-इस विधि,
उनके हैं अर्थ नहीं सम्यक ॥

हीरावल्लभ— योगेश्वर ! वेदज्ञ हैं आप ज्ञान के अर्क ।
अर्थ आपके ठीक हैं ठीक आपका तर्क ॥
जो निराकार प्रभु हैं उसकी,
प्रतिमा बतलाते वेद नहीं ।
यह भेद समझ ले यदि जनता,
तो शेष रहेगा खेद नहीं ॥

सब— बोलो वैदिक धर्म की जय ।

हीरावल्लभ— इस लिए अभी प्रतिमाओं को,
करता हूँ यहीं विसर्जित मैं ।
इस सिंहासन पर करता हूँ,
अब चारों वेद प्रतिष्ठित मैं ॥

(मूर्त्तियों को गंगा में विसर्जन करना और वेद को
सिंहासन पर प्रतिष्ठित करना)

स्वामी जी–भद्रजन ! पण्डित हीरावल्लभ ने वेद मत स्वीकार कर लिया । ऐसे ही ब्राह्मणों से भारत का कल्याण होगा ।

हीरावल्लभ—स्वामी जी का कथन सत्य है । वेद में मूर्त्ति पूजा और अवतार वाद का वर्णन नहीं है । यह स्वार्थियों ने अपनी जीविका चलाने के लिए चलाई हैं जो सर्वथा त्याज्य हैं ।

छत्र सिंह—(आकर) यह सत्य है ।

हीरावल्लभ— धारणा मनुजों में हो सद्भाव की सद् कर्म की ।
वाटिका फूले फले पृथ्वी पे वैदिक धर्म की ॥

॥ गाना ॥

गोपाल– वसुधा को सुधा सार दया कर पिला रहे ।
ऋषिराज वेद-धर्म दुबारा जिला रहे ॥
ढोंग और ढकोसलों की ढकी पोल खोलकर–
कल्पित मतों के दुर्ग की नीवें हिला रहे ॥
मृतवत यह जाति फिर से हो जाये बलवती–
अमृत पिला रहे हैं सँजीवन खिला रहे ॥
ऊँच और नीच का सब मिट जाय भेदभाव–
वेदाधिकार यज्ञ कराकर दिला रहे ॥
बिखरे हुए थे मोती इस आर्य जाति के–
उनको पिरोके प्रेम की लड़ में मिला रहे ॥

(पर्दा)

॥ ड्राप ॥

द्वितीय अङ्क
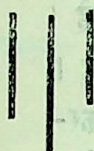
प्रथम दृश्य

—:❀:—

(एक ओर से पं० अम्बादत्त का प्रवेश, दूसरी ओर से छत्रसिंह का आना)

अम्बादत्त—हा हा हा हा–हा हा हा हा हा हा–हा हा हा हा हा।

छत्रसिंह—आज तो हंसी के फव्वारे छूट रहे हैं, पेट में हंसी के लड्डू फूट रहे हैं–पंडित जी महाराज, क्या नानी की पहुनाई याद आ रही है या सुसराल से बुलाने नाइन आई है। कहिए तो क्या समाचार है।

अम्बादत्त– समाचार वमाचार कुछ नहीं। चमत्कार! चमत्कार !!

छत्रसिंह— वह क्या ?

अम्बादत्त –सारा इलाका दयानन्द की जय बोलता है—और दयानन्द सारे इलाके में हमारी जय बुलवाता है क्या यह साधारण चमत्कार है ?

भगवानदास (आकर) नाक कटवादी। पं अम्बादत्त ने हिन्दुओं की नाक कटवादी।

छत्रसिंह—मिथ्या। सर्वथा मिथ्या। अम्बादत्त ने नहीं तुमने नाक कट वादी।

भगवानदास– हमने कैसे ?

अम्बादत्त—पहिले यह बताइये कि हमने कैसे ?

भगवानदास– तुमने ऐसे–कि तुमने दयानन्द की हाँ में हाँ मिलादी।

छत्रसिंह—यह भी मिथ्या—कि इन्होंने दयानन्द की हां में हां मिलाई। इन्होंने तो वेद की बात सत्य बतलाई। वास्तव में तो तुमने नाक कटवाई।

भगवानदास—हमने कैसे ?

छत्रसिंह—ऐसे-कि तुम ऐसे आदमी को जो वेद से मूर्ति पूजा सिद्ध न कर सके शास्त्रार्थ के लिए लेही क्यों गये।

भगवानदास—यही तो धोखा हुआ। वैसे तो यह पंडित लोग यजमानों को दिन में तारे दिखलादें। पृथ्वी आकाश के कुलावे मिला दें। तर्क की शल्य से बाल की खाल निकाल दें और उस लंगोटिये के आगे शस्त्र डालदें।

छत्रसिंह—अजी झाग डाल दें।

नन्दराम—(आकर) परन्तु अब तो यह सोचो कि यह कटी हुई नाक जुड़े कैसे ?

छत्रसिंह—यह भी मिथ्या। कटी हुई नाक जुड़ती ही नहीं है और जुड़ भी जाये तो सुन्दरता नहीं आती है।

नन्दराम—ठीक कह रहे हो चौधरी साहब, कटी नाक जुड़ने में वह सुन्दरता नहीं आती जो चपत खाने में आती है। कहिए कैसी कही ?

छत्रसिंह—यह भी मिथ्या। चपत खाई नहीं, लगाई जाती है।

(नन्दराम के चपत लगाना और जाना)

नन्दराम—अबे ओ चपतसिंह जाट-तेरे सिर के ऊपर राजा भोज की खाट।

छत्रसिंह—(नेपथ्य में से) तेरे सर पर गंगवा तेली का कोल्हू

अम्बादत्त काफ़िया तो मिला ही नहीं।

छत्रसिंह—(आकर) बोझों तो मर जायेगा। (जाना)

कर्णसिंह—आकर) कौन मरेगा ? कौन मारेगा ?

अम्बादत्त– श्री महाराज, दयानन्द को परास्त करने का उपाय सोच रहे हैं।

छत्रसिंह–(आकर) मिथ्या। यह तो राजा भोज और गंगवा तेली की कहावत सुना रहे थे।

राव—अब तक ही बहुत तीर मारा है जो आगे दुर्ग जीतोगे। वेद में से एक भी मंत्र न निकाल पाये जिस से मूर्ति पूजा श्राद्ध और अवतार सिद्ध हो जाये।

अम्बादत्त—तो इसमें हमारा क्या अपराध है अन्नदाता! यह तो वेद बनाने वाले का दोष है कि उसने ऐसा मंत्र नहीं बनाया।

छत्रसिंह—यह लांछन मिथ्या। वेद ईश्वर का ज्ञान है। उसमें दोष कहां?

भगवानदास—पर यह असली वेद भी कहां हैं–असली वेद तो शंखासुर ले गया। यह वेद तो जर्मनी से मँगा लिये हैं। जर्मनियों ने खास २ मन्त्र लुपा लिये हैं।

छत्रसिंह—यह भी मिथ्या—

राव—कहिये वेद में मूर्त्ति-पूजा—

अम्बादत्त—नहीं–(राव धमकाता है) है–नहीं है–है—

राव—वेद में अवतार—

अम्बादत्त—दयानन्द के यहाँ 'नहीं'–आपके यहाँ 'हाँ'।

राव—वेद में श्राद्ध—

अम्बादत्त—है–है–है–अन्नदाता।

छत्रसिंह—है ऽ ऽ ऽ अन्नदाता! अरे पेटुओ तुमने अपने पेट की खातिर सब पाप किए हैं। वेद का उपहास उड़ाते हो। राम, राम, राम।

भगवानदास—(मुँह चिढ़ा कर) जियो बेटा गंगाराम।

(ग्रामीणों का आना)

१-ग्रामीण— दुहाई है। अन्नदाता दुहाई है।

२-ग्रामीण—तबाही है। सरकार तबाही है।

राव— क्या आपत्ति आई है ?

१-ग्रामीण—सरकार जब बाढ़ ही खेत को खाये तो फसल कहां जाये।

राव— बात तो बताओ, या पहेलियां बुझाते हो—

१ ग्रामीण—सरकार ! सरकार ! इन पंडित नन्दराम नें हमसे पांच सौ की जगह छै सौ का रुक्का लिखवाया। रसीद पर अंगूठा लगवाया। जब रुपया मांगा तो धता बताया।

राव—प्रमाण—

नन्दराम—झूठे हैं—वेईमान।

२-ग्रामीण— निर्णय करेंगी गंगा माई। हम गंगा जली लायें। इनसे गंगा जली उठवायें।

(गंगा जली सामने रखते हैं)

नन्दराम—(गंगा जली उठाकर) मैं गंगा जली हाथ में लेकर कहता हूँ कि इन्होंने रुपया लिया भी और नहीं भी लिया।

छत्रसिंह—यह कैसे ? यह तो है गड़बड़ घोटाला—

नन्दराम—लिया ऐसे कि इन्होंने रुक्का लिखा। वही खाते में अंगूठा लगाया।

राव—और नहीं भी लिया—यह कैसे ?

नन्दराम—मैंने समझाया कि रुपये ले जाओगे तो चोर चुरा लेंगे या जुये में हर जायेंगे, इसलिए जब कन्या का विवाह हो तो ले जाना—

राव—ठीक बखाना—

१-ग्रामीण मगर जब कन्या का विवाह आया तो इनके घर का कौड़ी फेरा लगाया, इन्होंने बार बार, टालू मिक्स्चर पिलाया।

राव—तो गौने में ले जाते।

१-ग्रामीण जब गौने का समय आया तो भी रुपया हाथ न आया।

राव—तो जब कन्या के बालक हो तो छोछक देने को ले जाना।

१-ग्रामीण—सरकार वह समय भी आया। इनके सामने गिड़गिड़ाया परन्तु इनका हृदय नहीं पसीजा।

राव—तो जब बालक का मुँडन हो तो ले जाना।

१-ग्रामीण—मुंडन? किसका मुंडन? कैसा मुंडन? वह बालक और उसकी माता तो स्वर्ग सिधार गईं। (रोना)

राव अबे रोता क्यों है। जब छोटी कन्या का विवाह हो तो ले जाना।

१-ग्रामीण—छोटी कन्या कोई है ही नहीं।

छत्रसिंह—वाहरे भांतुओं-टालुओं। रुक्का रसीद लिखा कर भी रुपया नहीं देते-भरे देते हो। इन्हीं ढरों से गुलछर्रे उड़ाते हो। बेईमानों कीड़े पड़ेंगे कीड़े।

१-ग्रामीण—रुपया नहीं मिला तो रुक्का ही मिल जाये।

नन्दराम—रुक्का-रुक्का कैसे मिल सकता है। उसकी नालिश भी करदी।

राव—क्यों?

नन्दराम—क्योंकि मीयाद जो निकली जा रही थी।

छत्रसिंह—रुपया दिया नहीं और नालिश करदी।

नन्दराम—हाँ जैसे दयानन्द ने चपत मारकर तेरी बुद्धि ठीक करदी।

छत्रसिंह—अरे वाहरे चक्राङ्कितो! भोले भालों को फाँसने के लिये क्या चक्र चलाया है। रुपया ऐंठने के लिए क्या मक्र फैलाया है।

१-ग्रामीण—तो सरकार-हमारा क्या न्याय हुआ।

भगवानदास—समझ लो रुपया मिला ही नहीं।

अम्बादत्त—रुक्का लिखा ही नहीं।

१-ग्रामीण—तो सरकार हमारा क्या न्याय हुआ ?
भगवान—समझ लो रुपया मिला ही नहीं।
अम्बा— रुक्का लिखा ही नहीं।
छत्र— नालिश हुई ही नहीं—? क्यों। जब रुपया दिया ही नहीं तो नालिश कैसी ?
अम्बा— जैसे ईश्वर अजन्मा है फिर भी अवतार लेता है।
छत्र— तुम जैसे बेईमानों का नाश करने के लिए।
राव— बात न बढ़ाओ, आओ—मैं भर पाई लिखा दूंगा।
छत्र— लिखना है तो यहीं लिखा दो।
राव— (नन्दराम से) ठीक है—तो यहीं लिख दो। (जाना)
छत्र— (नन्दराम से) लिखो।
नन्दराम—अबे क्या तू खफीफा जज है या जंट।
छत्र —देखते क्या हो। लातों के भूत बातों से नहीं मानते। लगाओ जूते।
नन्दराम—लो—लिखा लो।
२-ग्रामीण—पकड़े रहना—कहीं भाग न जाये।
नन्दराम—(१ ग्रामीण से) जाओ, कलम ले आओ।
(१ ग्रामीण का जाना)
(२ ग्रामीण से) तुम दावात ले आओ।
(२ ग्रामीण का जाना)
(३ ग्रामीण से) तुम कागज लाओ। (३ ग्रामीण का जाना)
भगवान—(छत्र सिंह की ओर संकेत कर) अब इसका छत्र हटाओ।
(नन्दराम और भगवानदास का छत्र सिंह को पकड़ कर धक्के देते हुए बाहर ले जाना)
ग्रामीण—(आकर) हैं—यह क्या ?
(सब का जाना)
अम्बा०—अचम्भे का बच्चा।

द्वितीय दृश्य

(चन्द्रमा और तारे चमक रहे हैं। अनूप शहर में गंगा के किनारे। स्वामी दयानन्द समधिस्थ हैं। बदायूं के कलक्टर और पादरी आते हैं।)

कलक्टर—ओ–वहुट सर्दी है।

पादरी —अम को भी जाड़ा लगटा है।

कलक्टर—अम अपना सिगार जलाते हैं। आप भी जलायें।
(सिग्रेट जलाने के लिये दिया सलाई जलाते हैं–उसके प्रकाश में समाधिस्थ स्वामी जी को देखकर) ओ–यह कौन आडमी है? इतना राट में, जाडे में वैठा है–मर गया है।

स्वामी— ओ–३–म्।

कलक्टर— इटना राट, इतना सर्दी-आप नंगा बैठा है-जाडा नहीं लगटा

पादरी— माल खाते हैं—

स्वामी— हमें क्या, दाल चपाती खाने वाले, वहुत हुआ तो दूध मिल गया। माल तो आप खाते हैं। अण्डा मुर्गी मदिरा से भी नहीं हिचकिचाते हैं। मोटे-मोटे वस्त्रों में बन्दगोभी की तरह बंधे हुये हो। आओ–थोड़ी देर मेरी तरह बैठो।

पादरी— फिर आपकों जाडा क्यों नहीं लगता?

स्वामी— ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास। आपके मुख को जाड़ा नहीं लगता–क्योंकि खुले रहने के कारण अभ्यास हो गया है।

कलक्टर—बावा से कड़ा मत वोलो। अच्छा हमने इण्टरफियर किया। माफी मांगता है (टोप उतार कर) सलाम। हम जिले का कलक्टर है। कोई तकलीफ हो टो वोलना।
(दोनों का जाना। स्वामी जी का समाधिस्थ हो जाना। धीरे-धीरे रात्रि का ढलना, प्रभात पश्चात प्रातः सूर्योदय होना। टीकाराम का आना)

टीकाराम—नमस्तेऽस्तु भगवन !
स्वामी—तुम अभी मथुरा नहीं गये ?
टीकाराम—जा रहा हूँ–दर्शनार्थ चला आया–यहीं से मथुरा जाऊँगा ।
स्वामी—भक्त गोपाल सिंह–किशनसिंह–धर्मसिंह आनन्दित हैं ?
टीकाराम—सब सकुशल हैं। वे भी आये हुए हैं। श्री सेवा में आते ही होंगे। (देखकर) लीजिये, वे आ गये। (सब का आना)
सब— नमस्तेस्तु भगवन ।
स्वामी— कल्याणमस्तु ।
गोपाल०—घोर शीत पड़ रहा है। ठण्डी बयार चल रही है। इतने मोटे वस्त्र पहिनने पर भी जाड़े के मारे हमारे दाँत किट-किटा रहे हैं। परन्तु महाराज अवस्त्र बैठे हैं। हमें इससे अति कष्ट होता है। इसलिऐ आपके लिए कम्बल लिहाफ गद्दे वण्डी आदि लाये हैं। स्वीकार कीजिये ।
स्वामी—ठाकुर जी, आप इतने इतने कपड़े पहिने हैं फिर भी आपको जाड़ा लगता है। तो सिद्ध हुआ–कि जाड़ा कपड़ों से नहीं जाता है। फिर मैं इन वस्त्रों को लेकर क्या करूँ ?
गोपाल०—तो महाराज ! जाड़ा काहे से जाता है ?
स्वामीजी—अग्नि से—
गोपाल०—परन्तु महाराज, आपके पास तो अग्नि भी नहीं है ।
स्वामी—ब्रह्मचर्य्य की अग्नि इस शरीर में प्रज्ज्वलित हो रही है। योग के आवरण से ढकी हुई है ।
गोपाल०—हम भी उसका चमत्कार देखें ।
स्वामी—लो देखो–(अपने दोनों हाथों के अंगूठे घुटनों पर टेक कर बलपूर्वक दबाना) देखो—
गोपाल०—ओह ! पसीना, इतने शीत में माथे पर पसीना, सारा शरीर पसीने से तर। धन्य है–धन्य है योगिराज दयानन्द की जय, गुरुदेव दयानन्द की जय ।

किशन०—आज योग का चमत्कार देखा, धन्य है। भगवन आज्ञा हो तो गंगा स्नान कर आयें, सन्ध्यादि से निवृत हो आयें, फिर उपदेशामृत से प्यास बुझायें ।

स्वामी—अवश्य ! अवश्य !!

(सबका जाना। स्वामी जी का कुटिया में जाना। वामी गुंडों का शराब की बोतलें आदि लिए कोलाहल करते हुए आना)

१—वामी—पियो, पियो खूब पियो। पीते पीते भूमि पर गिर पड़ो, फिर उठो—फिर पियो ।

२—वामी—अरे बेटा, हम तो संस्कृत में पीते हैं। शराब नहीं वारुणी-वारुणी पीते हैं। हम तो अपने बेटे से कह मरेंगे कि हमारी चिता पर घी मत डालना, वारुणी में नहला कर आग लगा देना ।

१—वामी—अरे, इस गप्पा बावा को भी पिलाओ। ओ दयानन्द—अरे दयानन्द तू तो हमें देख कर डर के मोर अन्दर चला गया। बाहर आ—तुझे वारुणी से शुद्ध करें ।

३—वामी—वारुणी का तो वेद में भी विधान है। सौत्रा मण्याँ सुराँ पिवेत तो हम पीते हैं तो क्या पाप करते हैं। अच्छा कुटिया को वारुणी से तर कर दो—तव निकलेगा ।

२—वामी—कुटिया के चारों तरफ वारुणी छिड़कता हूँ —

१—वामी—अबे यह क्या करता है ? इस अमृत को रेते में डालता है। ला—(चुल्लू बनाकर) इस चुल्लू में डाल ।

३—वामी—अबे उल्लू वारुणी चुल्लू से नहीं—(बोतल को मुँह से लगा कर) ऐसे पीते हैं ।

१—वामी—चक्राङ्कित मत को बुरा बताता है ? शास्त्रार्थ करले ।

(स्वामी जी का कुटिया से निकलना)

स्वामी—नवलजंग ! नवलजंग भाई ! देखो ये अतिथि आये हैं। इनका आदर सत्कार करो।

नवलजंग—(आकर) ओ वामी गुंडों। (धमकाकर) निकलो—

१-वामी—अजी सालारजंग साहब, (नवलजंग टीप मारता है) नहीं-नहीं नवलजंग जी-हमें तो भगवानदास भागवती ने शास्त्रार्थ के लिए भेजा है।

नवल—शास्त्रार्थ का बच्चा। एक लैन में खड़े हो।

२-वामी—पहलवान जी, थोड़ी सी आप भी पियें—लो।

नवल—(डांट कर) सीधे खड़े हो (धमका कर) सीधे खड़ा हो (सब सीधे खड़े हो जाते हैं) कान पकड़ो—पकड़ो—

३-वामी—अजी हम तो गुरु मन्त्र लेने आये हैं।

नवल—कान पकड़ो। (सब कान पकड़ते हैं) बैठो (बैठते हैं) उठो (उठते हैं) बैठो (बैठते हैं) उठो (उठते हैं-हुंकार से) निकल जाओ (सब गिर पड़ते हैं) चलो, रेंग कर चलो (सबका रेंग कर चलना)

३-वामी—अरे बोतल, बोतल तो उठाले।

(एक ओर से नवलजंग व वामियों का जाना। दूसरी ओर से ठाकुर गोपाल सिंह आदि का आना)।

स्वामी—यह जो सकल चराचर जगत है उसका स्वामी एक पारब्रह्म परमेश्वर है। उसने सारा संसार मनुष्यों के लिए बनाया है। मनुष्य मात्र को चाहिये कि इस संसार की वस्तुओं का त्याग के साथ भोग करे किसी का धन न हड़पे। आज सबके लिए यही उपदेश है। वेद ने बतलाया है-"ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंचित जगत्य जगत तेन त्येक्ते न भुंजीथ मागृधः कस्यस्विद्धनम्।

गोपाल—भगवन् हमने 'ओ३म्' नाम का कीर्तन बनाया है। आज्ञा हो तो सुनायें।

स्वामी—कीर्तन का कोई विशेष लाभ नहीं। हाँ—थोड़ा से मनोरंजन और शान्तिपूर्ण कालयापन हो जाता है इसलिए हमें आपत्ति नहीं।

टीका—(आकर) महाराज! आपगत जिला मेरठ निवासी अनूप शहर के तहसीलदार श्री सैयद मुहम्मद पधारे हैं।

स्वामी—सादर लिवा लाओ (टीकाराम का जाना और तहसीलदार साहब को लेकर आना)

सैयद—बाबा जी महाराज, दस्त बस्ता नमस्ते अर्ज़ करता हूँ।

स्वामी—आइये! भक्तवर! विराजिये।

सैयद—महाराज! बुतपरस्ती का तो इस्लाम भी खण्डन करता है फिर वेदधर्म की फ़ज़ीलत क्या है?

स्वामी—ताज़िये बनाना और कब्रों पर चादरें चढ़ाना भी तो बुत परस्ती है।

सैयद—इस्लाम वहदानियत का अलम बर्दार है।

स्वामी—मगर वह खुदा के साथ रसूल को भी मानता है। मगर वेद केवल एक ईश्वर को बखानता है।

सैयद—आपके यहां भी वो निराकार और साकार का झगड़ा है।

स्वामी—लोगों ने अज्ञानवश साकार के उलटे अर्थ लगाकर नए नए पंथ चला दिये हैं। यह सब वेद के प्रतिकूल हैं। वेद तो केवल एक निराकार की पूजा बताता है—

ब्रह्मा विष्णु शंकर कुवेर शम्भु इन्द्र शिव,
अजर अमर अभय अनन्त व्योम है।
गणपति महीपत प्रजापति सुरपति,
भूपति भवपति भावपति सोम है।
शेष सर्वेश गणेश अखिलेश परेश,
देव अधिदेव महादेव रोम रोम है।

निराकार निरंकार निर्विकार नीतिकार,
नाम तो सहस्त्रों हैं पर मुख्य नाम ओम् है ।

गोपाल—अब ओ३म् नाम का कीर्तन सुनिये ।

सैयद—मैं भी कीर्तन में बैठ सकता हूँ ?

गोपाल—क्यों नहीं—बैठिये, तशरीफ़ रखिये ।

(गोपाल सिंह आदि गाते हैं)

॥ गाना ॥
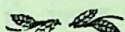
तू है सर्व शक्तिमान, तू सर्व विद्यमान,
तू हैं करुणानिधान, प्रभु ओ३म-ओ३म-ओ३म ॥ ३ ॥
तू है सद्गुण की खान, तेरी महिमा महान
दिया वेदों का ज्ञान, प्रभु ओ३म ओ३म ओ३म ॥ ३ ॥
भूपति भवपति भावपति जीवनपति अभिराम ।
कर्त्ता हो तुम विश्व के और अकर्ता नाम ॥
न्यायकारी निर्विकारी उपकारी अविकारी,
हितकारी सुखकारी, प्रभु ओ३म्-ओ३म्-ओ३म् ॥ ३ ॥
तू हैं सबका भंडारी, तेरे सब हैं भिखारी
सुधि लीजिये हमारी, प्रभु ओ३म-ओ३म-ओ३म ॥ ३ ॥
तेरी गति है अटपटी झट पट लखै न कोय ।
जो मन का खट पट मिटै चट पट दर्शन होय ॥
दीनानाथ प्राणनाथ, विश्वनाथ जगन्नाथ,
हो अनाथों के नाथ, प्रभु ओ३म-ओ३म-ओ३म ॥ ३ ॥

झुके चरणों में माथ, पकड़ लीजियेगा हाथ,
गायें 'चन्द्र, साथ साथ, प्रभु ओ३म ओ३म ओ३म ॥ ३ ॥

—:०:—

(भगवानदास और कल्याणसिंह नाइब तहसीलदार का आना)

भगवान—बन्द करो, बन्द करो निराकार और साकार का झगड़ा ।

कल्याण—आपके उपदेशों से जनता में सनसनी फैल गई है। निराकार-वादी और साकारवादी दो दल खड़े हो गये हैं। यदि वे टकरा गये तो ख़ून ख़राबा हो जायेगा। इसलिये आप यहां से अपना डेरा उठाइये ।

सैयद—नाइब साहब, आप योगिराज से न टकराइये। यह सारा विरोध कृष्णानन्द का उठाया हुआ है। वह अपनी खिजालत मिटाता है - व्यर्थ का बैर बढ़ाता है ।

कल्याण—यह रामलीला का विरोध करते हैं। प्रजा से चन्दा न देने का अनुरोध करते हैं ।

स्वामी—आप राज्य कर्मचारी हैं—आपका काम शासन की व्यवस्था ठीक रखना है। रामलीला या मुहर्रम के लिए चन्दा जमा करना आपका काम नहीं। राज्य कर्मचारियों को साम्प्रदायिक बातों में नहीं पड़ना चाहिए ।

कल्याण—(स्वामी जी से) आप रामलीला में अडंगा लगायेंगे तो यहां से उठा दिए जायेंगे ।

सैयद—नाइब साहब, कृष्णानन्द, भगवानदास, नन्दराम आदि के भड़काने में न आओ। कलक्टर भी जिनके दर्शन को छिप कर आते हैं उन्हें साधारण न जानो। अक्ल हो तो पहिचानो—

कल्याण—इसी से तो लोगों का विश्वास बढ़ता जाता है कि यह क्रिस्तानों के भेदिया है ।

छत्र— (आकर) मिथ्या—मिथ्या—मिथ्या।

कल्याण—आप मुसलमान हैं—तास्सुब वर्त्तते हैं। इनके द्वारा तर्कीब से रामलीला का विरोध करते हैं।

छत्र— मिथ्या—मिथ्या।

किशन—ऐसे नेक दीनदार मुसलमान पर तुम जैसे पचासों घमण्डी पाखण्डी और उद्दण्डी हिन्दू न्यौछावर हैं।

छत्र— सत्य है—सत्य है।

गोपाल—(कल्याणसिंह आदि से) आप यहां से चले जायें नहीं तो अपमान से निकाले जायेंगे। हम साहब कलक्टर तक यह बात पहुँचायेंगे।

(कल्याणसिंह भगवानदास आदि का जाना)

रामसहाय—(स्वामी जी से) भगवन! भक्त का ताम्बूल स्वीकारें।

(स्वामी जी का पान लेकर खाना। रामसहाय एक ओर जाकर स्वगत)

शास्त्र चर्चा में इन्हें जीतना किंचित न सरल।
काम कर जायेगा सब पान में रक्खा है गरल॥ (जाना।

स्वामी—विष—विष—धोखा धोखा।

(जाना—पीछे पीछे टीकाराम का जाना)

सैयद—हैं! महात्मा को विष? किधर है—किधर गया मुर्दार। (जाना)

गोपाल—अब क्या हो? (किशनसिंह से) वैद्य को लाओ, पुलिस में जाओ, जहां भी हत्यारा मिले पकड़ कर लाओ।

छत्र— शिकंजे में कसवादो। खाल खींचकर भुस भरवादो।

टीका— (लौटकर) न घबराओ. न घबराओ। महाराज अच्छे हैं। विष निकल गया। न्यौली क्रिया से महाराज ने विष निकाल दिया। वे अब स्वस्थ हैं। आ रहे हैं।

(स्वामी जी का प्रवेश)

गोपाल—धन्य है। भगवान तुझे कोटशः धन्यवाद है।

(तहसीलदार विषदाता रामसहाय को पकड़ कर लाते हैं)

सैयद—यह है-यह है मलऊन। अमृत पिलाने वाले महात्मा को विष देने वाला। उपकार करने वाले से अपघात! पान के बहाने विश्वास-घात।

क्यों गिर पड़ा न कट कर विष देने वाला हाथ।
ले जायेगा यह अपयश मरने के बाद साथ॥
भारत को चाहता था करना तू आज अनाथ।
तेरे ही पाप से है झुका आज सबका माथ॥
उपकार करने वाले से यह घोर अनाचार।
ले जाओ ऐसे दुष्ट को पहुँचाओ कारागार॥

(सिपाही ले जाने लगते हैं)

रामसहाय - क्षमा, क्षमा, महात्मन क्षमा। योगिराज क्षमा।

(कल्याणसिंह व भगवानदास का आना)

कल्याण—छोड़ दो।

सैयद—ज़हर देने वाले को?

भगवान—ज़हर, कैसा ज़हर? किसको ज़हर? ज़हर दिया जाता तो यह शरीर समाप्त हो जाता। एक सीधे सादे सच्चे ब्राह्मण को फँसाकर आप भी चैन न पायेंगे।

गोपाल—इसने हमारे सामने महाराज को पान खिलाया। खाते ही महाराज का सिर चकराया। न्यौली-क्रिया से इन्होंने विष न निकाला होता तो विष ने काम तमाम कर डाला होता।

कल्याण—सब मक्कारी है। जनता पर प्रभाव डालने की तैयारी है। तहसीलदार साहब, मैं आपका मातहत जुरूर हूँ पर आपको परामर्श देता हूँ कि यदि आपको तहसीलदारी करना है तो इसे छोड़ दीजिये। वरना—

गोपाल—वरना क्या? आपको राव कर्ण सिंह पर गर्व है। यहां भी

उनसे कौन कम है। जाओ, कह देना उनसे टक्कर लेने की दम है।

छत्र— सत्य है।

रामसहाय—भगवन ! मुझे तो इस नर पिशाच (भगवानदास को बता-कर) ने ही सौ रुपये का नोट दिलवाया और इस निन्दनीय कार्य के लिए उकसाया। नाइब साहब ने बचा लेने का विश्वास दिलाया। पीठ पर थपथपाया। तब मैं यह नीच कर्म करने आया।

सैयद—अब राज़ समझ में आया। नाइब साहब, आपकी मुअत्तली का पर्वाना आचुका था। मैं आपके और आपके बच्चों की रोजी नहीं लेना चाहता था। मैं चाहता था कि आप राहे रास्त पर आजायें तो मैं आपके सब मामले ठीक करा देता। पर-आपने नाआक़बत अन्देशी से काम लिया। अफसोस-हैफ़-सद हैफ़—

लगवा दिया सभी के अपयश का आज टीका।
पर्वाना लीजिये यह अपनी मुअत्तली का॥
(पर्वाना देना)

कल्याण—ओफ़ ! (जाना)

भगवान—शूल ! शूल !! उदर में शूल !

फूल दिये जिसने उसे मैंने बोये शूल।
वही शूल मेरे लिये अब बन गये त्रिशूल॥
(चक्कर खाना-गिरना-गिरते पड़ते चला जाना)

रामसहाय—(स्वामी जी से)

बहुत दुष्कृत्य पर अपने मैं भगवन आज लज्जित हूँ।
कलंकित कर दिया नगरी को मैं ऐसा कलंकित हूँ॥
(सिर झुकाकर क्षमा मांगना)

छत्र — सत्य है ।

स्वामी — हाथ में इसके पड़ी कड़ियां हैं—उनको तोड़ दो ।
इसको पश्चात्ताप है—मैंने क्षमा की छोड़ दो ॥

छत्र — (साइड में) यह मिथ्या है ।

सैयद — क्या कह रहे हैं भगवन ! ऐसे दुष्ट पर दया ? बद के साथ नेकी करना ऐसा ही है जैसे नेक के साथ बदी करना ।

छत्र — यह सत्य है ।

स्वामी — मैं मानव को बन्धन से मुक्त कराने आया हूँ—फंसाने नहीं ।

गिरि से गिराये कोई तीर बरसाये कोई,
बर्छियाँ चलाये कोई अंग अंग मोड़ दे ।
गालियाँ सुनाये कोई तालियाँ बजाये कोई,
लाठियाँ चलायें कोई शीश चाहे तोड़ दे ।
जिह्वा झंझोड़ डाले ग्रीवा मरोड़ डाले,
जोड़ जोड़ तोड़ डाले नैन चाहे फोड़ दे ।
फिर भी अपराधी क्षमा याचना करेगा तो,
सम्भव नहीं है दयानन्द दया छोड़ दे ।

छत्र — सत्य है ।

(सिपाही ब्राह्मण की हथकड़ी खोल देते हैं)

रामसहाय — देखे छत्रधारी और देखे तेजधारी बहुत.
देखा नहीं वसुधा पे कहीं संस्कारी ऐसा ।
देखे योगिराज, महाराज अधिराज देखे,
देखा नहीं सुना नहीं कहीं व्रतधारी ऐसा ।
देखे द्विजराज बलराज सरताज देखे,
देखा नहीं ब्रह्म का पुजारी ब्रह्मचारी ऐसा ।
देखे हैं दयालु और देखे हैं कृपालु बहुत,
देखा नहीं कहीं अहिंसा का पुजारी ऐसा ।

छत्र— सत्य है ! सत्य है ! सत्य है !

(रामसहाय स्वामी जी के चरणों में गिरता है। भगवान दास और कल्याण सिंह का आना आश्चर्य में रह जाना। स्वामी जी को प्रणाम करना धीरे २ पर्दा गिरना)

—:o:—

ड्राप

तृतीय अङ्क
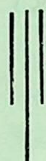
प्रथम दृश्य

—:❀:—

स्थान—कर्णवास में राव कर्णसिंह की बारादरी।
कर्णसिंह के निजी भृत्य अवधूत का सिर पर
कालीन और बग़ल में तकिया दबाये
हुये आना। क़ालीन बिछाकर
और तकिया लगाकर
बैठना)

अवधूत—(बैठे हुये) अवधूत! अवधूत!! अवधूत के बच्चे। (उठकर तकिये की ओर हाथ जोड़कर) जी सरकार। (बैठकर) पान ला (उठकर हाथ जोड़कर) बहुत अच्छा (जाना, पान लेकर आना) सरकार! पान लीजिये। (बैठकर स्वयम् खाना) पांव दबा (पांव फैलाना खड़े होकर) बहुत अच्छा (बैठकर अपने पांव आप दबाना है) क्या करें यारो योंही चित्त प्रसन्न कर लेता हूँ। स्वयं ही सेवक और स्वयम् ही स्वामी बन लेता हूँ।

जब कर्णवास के ठाकुर मोहनसिंह ने अपनी कन्या का विवाह बरौली के राव कर्णसिंह से रचाया तो दहेज के साथ साथ हमें भी भिजवाया। इसी लिए लोग मुझे अवधूत के स्थान में दहेजू कहते हैं। राव साहब मज़ाक में दहेजू की जगह दहजूत कहते हैं तो मैं भी उनसे श्रीयुत की बजाय सिरींऊत कहता हूँ। दिन भर कोल्हू के बैल की तरह घुमाते

हैं। कभी यह काम–कभी वह काम। जब मैं कुछ कहता हूँ तो बिज्जू की तरह आंखें दिखाते हैं। खैर जी, जो प्रारब्ध में लिखा है वह तो भुगतना ही पड़ेगा। चलूं–सब काम ठीक ठाक करूं। (जाना)

राव— (आकर) दहजूत, ओ दहजूत। अरे दहजूत........

अब— (नेपथ्य में से) जी–जी–जी–सिरींऊत (आकर) जी श्रीयुत।

राव— कहां मर रहा था ? क्या कर रहा था ?

अब— निराकार की प्रतिमा बना रहा था।

राव— अबे उल्लू, जिसका कोई आकार ही नहीं उसकी प्रतिमा कैसे बन सकती है।

अब— क्यों नहीं बन सकती है। लाखों करोड़ों अरबों रुपया लगाने वाले, देवालय शिवालय बनवाने वाले, उनमें भगवान की मूर्ति स्थापित कराने वाले क्या मूर्ख हैं ?

राव— मूर्ख हैं या गंवार ! तुझे इससे क्या सरोकार। तू सेवक है या उपदेशक। सेवा करने आया है या शास्त्रार्थ करने।

अब— थोड़ा थोड़ा शास्त्रार्थ तो सभी को करना चाहिए सरकार। नहीं तो बुद्धि पर जम जायेगी काई और तर्क की हो जायेगी सफ़ाई। उलझनों को सुलझाने में होगी कठिनाई।

राव— तू आदमी है या सौदाई। जा, पण्डित नन्दराम को बुलाला।

अब— जो आज्ञा। (जाना)

राव— हर बात में मीन मेष निकालता है। हर बात को दिल्लगी में टालता है।

अब— (आकर) सरकार ! सरकार ! पण्डित नन्दराम घर में नहीं है।

राव— तूने कैसे जाना।

अब— उनकी पण्डितानी ने बखाना कि पण्डित जी कहते हैं कि कहदे कि वे घर में नहीं हैं।

राव — और तूने इस सत्य माना ?

अव — जब पण्डित जी स्वयं कहला रहे हैं कि वे घर में नहीं हैं तो सत्य कैसे नहीं मानता ।

राव— अच्छा -पान ले आ ।

अव— जो आज्ञा। (जाना-तुरन्त आना) सरकार पनवाड़ी के यहां से लाऊं या आपकी सुसराल से मंगवाऊँ ?

राध— कहीं से ला ।

अव — बहुत अच्छा (जाना और लौटकर) मंद्राजी या महोवा—

राव — अवे कुछ मंगवा ।

अवधूत—बहुत अच्छा (जाना और लौटकर) चूना कम या ज्यादा ।

राव— (धमकाकर) फिर वही व्याधा ।

(अवधूत का जाना और पान लेकर आना)

अव— सरकार ! पान हाजिर हैं ।

राव— (पान हाथ में लेकर) उगालदान ले आ। (पान खाना अवधूत का जाना)

अव — (उगालदान लाकर) सरकार ! सरकार ! इसमें तो कोई सरुवा थूक गया है ।

राव— (पान थूक कर) अबे मवाली, यह कैसा पान कत्था न छाली-चूना ही चूना खाली! । मुँह जला दिया । दस रुपया जुर्माना ।

अव — ऊँ हूँ । चार आने मासिक वेतन और दस रुपया जुर्माना । पं० नन्दराम और भगवान दास ने सारे इलाके के चूना लगाया तो कुछ न बन आया । हमने पान पर चूना लगाया तो जुर्माने का हुक्म सुनाया । यह तो है इन्साफ़ का सफ़ाया ।

राव— अबे इन्साफ़ के बच्चे, जा पंडित भगवान दास को लिवा ला ।

अव— लिवा लाऊँ-या बुला लाऊँ ?

राव— लिवा ला ।

अब— कन्धे पर बिठा कर लाऊं, या उंगली पकड़ कर टहलाता हुआ लाऊं ?

राव— जैसे हो लिवा ला।

अब बहुत अच्छा। (जाना)

राव— विचित्र जीव है। कोई काम ठीक नहीं करेगा। दिन भर दिल्लगी करेगा।

अब— (आकर) सरकार ! सरकार !

राव — क्यों-क्या है समाचार ?

अब— बड़ा आनन्द आया सरकार ! पंडित जी से पंडितानी ने कहा कि तुम राव साहब के यहां जाओगे तो मैं अपने मैके चली जाऊंगी। पंडित जी ने कहा कि तू दयानन्द की सभा में जायेगी तो तेरी नाक काट लूंगा—यह कहकर पंडित जी ने पंडितानी के गिलास मारा वह तो लगा नहीं पर पंडितानी ने पंडित जी के जो बेलन तान कर मारा वह लग गया। पंडित जी का सिर खिल गया।

राव— सिर खिल गया ?

अब— फव्वारा फूट निकला।

राव— अबे-तू जहां जाता है ऐसे ही समाचार लाता है।

अब— समाचार जो आता है वही सुनाता हूं। अपनी तरफ से थोड़े ही घड़ लाता हूं (जाना)

(नेपथ्य में 'स्वाहा' 'स्वाहा' की ध्वनि सुनाई देती हैं)

राव— यह स्वाहा स्वाहा की ध्वनि कहां से आ रही है ?

नन्द— (प्रवेश कर) कर्णवास के ठाकुरों ने आपको नीचा दिखाने के लिए षडयन्त्र किया है।

भगवान—(आकर) दयानन्द ने आपको मारने के लिये तन्त्र किया है।

राव— षडयन्त्र, तन्त्र मन्त्र-कुछ समझ में नहीं आता। दयानन्द

को परास्त करने के लिए आपने जो उपाय बताया कराया, पानी की तरह रुपया बहाया, और यह दिन देखने में आया ?

नन्द— बाहर लगी आग को पानी से बुझाया जाता है। घर में लगी आग को दूध भी नहीं बुझा पाता है। आप वैष्णव धर्म का प्रचार कराते हैं। परन्तु छलेसर के ठाकुर मुकुन्दसिंह अपनी रियासत के मन्दिरों से मूर्त्तियों का बहिष्कार कराते हैं। हिमाचल और विन्ध्याचल के टकराव में हम छोटे २ टीले पिसे जाते हैं।

राव— तो अब क्या किया जाये ? मैं गुरुदेव को क्या मुंह दिखाऊंगा, क्या मुँह लेकर वृन्दावन जाऊंगा ?

भगवान— अग्रताश्चतुर्वेदान् पृष्ठता सशरं धनुः ।
एतद् ब्रह्मं इदंक्षात्रं शापादपि शरादपि ॥

जब शास्त्र काम नहीं आता है तो शस्त्र उठाया जाता है।

अव — (आकर) सरकार ! सरकार ! जमादार साहब आ गये।

राव— क्यों ? किसने बुलाया था ?

अव — मैंने। मैंने सोचा कि सरकार शास्त्र का काम शस्त्र से लेना चाहते हैं तो पुलिस भी बुला लूं–कि वक्त ज़रूरत पर काम आवे।

राव— अबे कम्बख्त ! जा–कोई बहाना ढूंढ़ कर टाल दे। (अवधूत इधर-उधर देखता है) यह क्या कर रहा है।

अव— बहाना ढूंढ़ रहा हूं।

राव— पाजी नमकहराम।

अव — मैं नहीं, भगवानदास और नन्दराम जो प्रातः से सायं तक अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं। इन्हें आप सा आंख का अन्धा वा गांठ का पूरा कहां मिलेगा। रुपया पानी की तरह बह रहा है। परन्तु परिणाम वही ढाक के तीन पात --

राव— बदतमीज़ बदज़ात ।

अब— यह दोनों—पेटार्थी और स्वार्थी जिन्होंने आपको उलटे मार्ग पर डाला, अपना मतलब निकाला। आपका धर्म नहीं कि योगी पर शस्त्र उठायें। ब्रह्म हत्या का कलंक माथे पर लगायें योगी से भिड़ने में घर उजड़ जायेगा, लोक और परलोक बिगड़ जायेगा ।

राव— (तलवार खींचकर जाना) अब किसी की नहीं सुनूंगा।

अब— (राव को रोकते हुए) सरकार ! सरकार !! (जाना)

नन्द— अपना दोनों तरह से कल्याण है। दयानन्द मारा जाये तो मार्ग का कांटा निकल जाये ।

भगवान राव फँस जाये तो रोज़ रोज़ की किल किल जाये ।

(दोनों का जाना)

द्वितीय दृश्य

स्थान—कर्णवास में गंगा किनारे यज्ञ मण्डप बना हुआ है। एक ओर स्वामी दयानन्द शोभायमान हैं। दूसरी ओर अन्य जन विराजमान हैं।
यज्ञ हो रहा है ।

सब— ओ३म् सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा। (आहुति डालना)
ओ३म् सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा। (आहुति डालना)
ओ३म् सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा। (आहुति डालना)
(सब लोग सावधान होकर यथास्थान बैठ जाते हैं)

स्वामी— जन्मनः जायते शूद्रः संस्काराद्विजो भवेत्। जन्म से सभी शूद्र अर्थात अज्ञानी होते हैं। संस्कारों से द्विज बनते हैं। तब गुण कर्म स्वभाव से ब्राह्मण क्षत्री वैश्य बनते हैं। प्रयत्न

करने भी जिसकी बुद्धि विकसित नहीं होती वह शूद्र रहता है ।

गोपाल— इसीलिए शूद्र अस्पृश्य हैं। घृणित हैं—

स्वामीजी—नहीं कभी नहीं। वे भी मनुष्य हैं। हमारी दया और सहानुभूति के पात्र हैं। यदि उन्हें दुदुराया गया तो वे आर्य जाति से पृथक हो जायेंगे।

गोपाल— गंगा में से एक दो घट जल निकल भी जाये तो गंगा का नीर कम नहीं हो सकता—

स्वामीजी—यदि स्रोत ही बन्द हो जाये तो—

गोपाल— भगवन ! ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से, क्षत्री बाहु से वैश्य उदर से शूद्र पैर से उत्पन्न हुये हैं। तो सब समान कैसे हो सकते हैं ।

स्वामीजी—प्रथम तो यह बात ऐसी है नहीं। ब्राह्मणोस्य मुखमासीत आदि मन्त्र में अलंकार है। अज्ञानियों ने इसके उलटे अर्थ लगा रखे हैं। पांव कट जाने पर क्या कोई मनुष्य खड़ा रह सकता है ? इसी प्रकार शूद्रों के पृथक हो जाने से आर्य जाति भी लड़खड़ा जायेगी ।

(एक मुस्लिम भक्त का स्वामी जी के पांव छूकर जाने लगना)

स्वामीजी—भक्त वर ! आप रोज़ उपदेश में आते हैं बिना कहे सुने चले जाते हैं। आप कौन हैं ? कैसे आते हैं ?

मुस्लिम—परवाना शमा पर जलने आता है। भँवरा फूलों का रस चखने आता है ।

गो कि नौ मुस्लिम हूँ मैं पर हिन्दुओं का अंश हूँ ।
राजपूती खून है और ठाकुरों का वंश हूँ ॥
मन प्रफुल्लित हो गया है आपके उपदेश से ।
लीजिए मुझको शरण—उद्धार करदें क्लेश से ॥

स्वामीजी—गोपालसिंह जी—

गोपाल— महाराज ! यह ठीक बताते हैं । हमारी तरह फूल के बर्तनों में खाते हैं तीज त्योहार मनाते हैं । सूर्य को अर्घ चढ़ाते हैं । सरकारी कागज़ों में राजपूत लिखे जाते हैं काज़ी निकाह पढ़ाते हैं मगर बाद को पंडित से ही संस्कार कराते हैं । दिल्ली के नवाब फरूखसियर ने इनके दादे को मुसलमान बना लिया था । यह नस्ल के हिन्दू हैं । खज़ाने पर तीन बन्दूकों का पहरा रहता है । गढ़ी जग बाजपुर के जागीरदार हैं । कुंवर फ़खरुद्दीन खां नामदार हैं ।

स्वामीजी—तब तो इनको अपनाना चाहिये फिर से अपने धर्म में मिलाना चाहिए ।

मुस्लिम—आप उपाय बताइये ।

स्वामीजी—मन से प्रायश्चित करो–तन की शुद्धि हो ।

मुस्लिम—भक्त को आदेश अगवन आपके स्वीकार हैं ।

गोपाल—हम भी छाती से लगाने को तुम्हें तैयार हैं ॥

(दोनों का गले मिलना)

स्वामीजी—धन्य है ।

अब— (आकर स्वामी जी को प्रणाम करके) बरौली के राव साहब कर्णसिंह पधारते हैं ।

(राव का आना । साभिमान सभा पर दृष्टि डालकर स्वामी जी से)

राव— हम कहां बैठें ?

स्वामीजी—जहां आपकी इच्छा हो ।

राव— (घमण्ड से) हम तो—जहां आप बैठे हैं--वहां बैठेंगे ।

स्वामीजी—(शीतल पाटी को हटाकर) आइये, बैठिये ।

राव— आप गंगा को नहीं मानते ?

स्वामीजी—गंगा जितनी है उतनी मानते हैं ।

राव— (सावेश) कितनी है ?

स्वामीजी—(कमण्डल दिखाकर) हम सन्यासियों के लिए तो कमण्डल भर है।

राव— गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानाम शतैरपि। मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णु लोकं स गच्छति।

स्वामीजी—एतदपि गप्पाष्टकम् मनुष्याणाम कोलाहला। यह तो जल है। जल से तन की शुद्धि होती है–मन की या आत्मा की नहीं। मोक्ष जल से नहीं सत्कर्मों से मिलता है।

राव— हमारे यहां रामलीला होती है। वहां चलिये—

स्वामीजी—साधु सन्तों को इन सांसारिक बातों से क्या काम ?

राव— आपने अनूप शहर में भी रामलीला का खण्डन किया।

स्वामीजी—यहां भी करेंगे। राम मर्य्यादा पुरुषोत्तम थे। उन महापुरुष की लीला बनाना, लौंडों को वेष बनवाकर गली कूंचों नचवाना, गन्दे गीत गवाना। बड़ी लज्जा की बात है।

राव— आप चक्रांकित मत का खण्डन करते हैं।

स्वामीजी—जो वेद विरुद्ध बात है उसका खण्डन करते हैं। आपने क्षत्री होकर मस्तक पर भिखारियों के चिन्ह क्यों बनाये हैं। भुजायें दग्ध क्यों कराई हैं ?

राव— यह हमारा परम मत है। तप्त तनु स्वर्गं गच्छति।

स्वामीजी—शरीर को दग्ध करने से स्वर्ग नहीं मिलता। यम नियम प्राणायाम व्रत तप से शरीर को तपाने से स्वार्गानन्द प्राप्त होता है।

राव— आप चक्रांकित मत का खण्डन करेंगे तो हम बुरी तरह पेश आयेंगे।

स्वामी— चिन्ता न धमकियों की तनिक मुझको राव है।
बोलूंगा सत्य बात यह मेरा स्वभाव है॥

राव— (खड़े होकर) ढोंगिये, तू चक्रांकित मत का खण्डन करता है। जो चक्रांकित नहीं वह चाण्डाल है।

स्वामीजी—आप कब से चक्रांकित हुये ।
राव— तीन वर्ष से—
स्वामीजी—आपके पिता जी भी चक्रांकित थे ?
राव— नहीं—वे नहीं थे ।
स्वामीजी—तो आपके कथनानुसार तीन वर्ष पूर्व आप स्वयं और आपके पिता जी आजन्म चाण्डाल थे ।
राव— मुंह सँभाल पापी, घण्मडी पाखण्डी (तलवार की मूठ पर हाथ धर कर) अब तो मूर्त्ति पूजा का खण्डन कर—
स्वामीजी—(खड़े होकर)

कर नहीं सकती है भयभीत यह तलवार मुझे ।
छोड़ दूं भय से जो सत्पथ तो है धिक्कार मुझे ॥

राव— ओहो ! यह ऐंठ, यह शान, यह मजाल, धूर्त्त दुष्ट चाण्डाल ।
स्वामीजी—तलवार का लोहा परखना हो तो जयपुर जोधपुर के नरेशों से परख । शास्त्र चर्चा करनी हो तो रंगाचारी को बुला ।
राव— गुरुदेव रंगाचारी के सामने तू कीड़ी है । तुझ जैसे उनकी जूतियां उठाते हैं ।
स्वामीजी—(हंसकर) रंगाचार्यस्य मम समीपे का गतिः ?
राव— यह अभिमान ? (तलवार म्यान से निकाल कर स्वामी जी की तरफ बढ़ना)
स्वामीजी—(हुंकार से) सावधान ।
राव— सँभाल वार (बढ़ना)
स्वामीजी—(बढ़कर) कुलांगार ! (राव को धक्का देना उसका लड़खड़ाना, फिर सँभलकर)
राव— छोड़ दूं अब तुझको जीवित तो मुझे धिक्कार है ।
तू है—मैं हूं -तेरी छाती और यह तलवार है ॥

(राव का स्वामी जी पर तलवार चलाना । स्वामी जी का तलवार वाला हाथ पकड़ लेना)

स्वामीजी—(हाथ पकड़े हुए)
डिगा सकेगी मुझे न किंचित भी,
वेद-पथ से अधम की धमकी ।
बहुत ही लज्जित है खड्ग तेरी,
जो एक निहत्थे के सर पे धमकी ।।

(राव का तलवार वाला हाथ छुड़ाने का प्रयत्न करना,
स्वामी जी का तलवार छीन लेना)

स्वामीजी—नहीं तू कर सका इस तन के इस तलवार से टुकड़े ।
बता तेरे करूँ टुकड़े कि इस तलवार के टुकड़े ।।

(तलवार के दो टुकड़े करके फेंक देना)

राव-- (तलवार की मूठ वाला भाग उठाकर) पाजी—
किशन— (लट्ठ दिखाकर) सर तोड़ दूँगा—
स्वामीजी—शान्त ! टूटने योग्य वस्तु टूट चुकी ।

(कर्णसिंह का जाना, छत्रसिंह का आना)

छत्र— आक्रमणकारी पर दया, न मन में क्लेश न चित्त में द्वेष !
धन्य हो योगिराज ऋषिराज दयावतार कोटिशः नमस्कार ।

(सबका नमस्कार करना)

सब— ऋषिराज की जय ।

(पर्दा गिरना)

तृतीय दृश्य

स्थान कर्णवास में राव कर्णसिंह की बारादरी ।
अवधूत का आना ।

अव— अपमान, महान अपमान घोर अपमान । रज का सत् से टकराव, कहां योगेश्वर योगिराज और कहां एक साधारण राव ।
राव— (आकर) खामोश ।

कायर पामर क्या बकता है यह तो सेवक का कर्म नहीं ।
अपमानित होकर मौन रहूँ यह रजपूतों का धर्म नहीं ॥

अव— यह भी क्षत्री का धर्म नहीं तलवार उठाये यतियों पर ।
यह भी क्षत्री का कर्म नहीं तलवार उठाये सन्तों पर ॥

राव— सन्त ? कैसा सन्त ? कहां का सन्त ? सन्त ! सन्त !

भगवान—(आकर) जो देवताओं की निन्दा करे वह सन्त ! जो धर्म की जड़ उखाड़े वह सन्त ! ऐसे सन्त से तो चाण्डाल अच्छा ।

अव— वे योगी हैं । योगिराज हैं । दया सागर हैं । उनसे रार बढ़ाना उचित नहीं । अगर एक बार कोप भरी दृष्टि से देख लिया तो भस्म हो जाओगे :—

उन ऋषि से कैसा बैर भाव जो सरल हृदय हैं कोमल हैं ।
गङ्गा समान जो निर्मल हैं विन्ध्या समान जो निश्चल हैं ॥

राव— शत्रु के पक्षपाती, विश्वासघाती, तेरा रक्त ठण्डा पड़ गया है तो चूड़ियां पहन कर हीजड़ों में मिलजा । (लात मारना)

अव— स्वामिभक्ति का यह पुरस्कार । पद-प्रहार, तिरस्कार, दुर्व्यवहार कीजिये, कीजिये । किन्तु मैं विभीषण की तरह शत्रु से नहीं मिलूँगा । जिस पद ने प्रहार किया है उसे पकड़ूंगा । उलटे मार्ग में नहीं जाने दूंगा ।

राव— निकल जा यहां से (अवधूत का जाना) वैरागियों का क्या समाचार है ?

नन्द— (आकर) उन पर कर्णवास के ठाकुर गोपालसिंह छलेसर के ठाकुर मुकुन्दसिंह, सरदौल के ठाकुर हुलाससिंह का दबाव है । दयानन्द के मित्र बलदेव गिरि का प्रभाव है ।

भगवान—चिन्ता नहीं । आपके इशारे पर एक नहीं, दो नहीं—पचासों व्यक्ति सिर कटाने को तैयार हैं । जहां आपका पसीना गिरे वहां अपना रक्त बहाने को तैयार हैं ।

अब— (आकर) ये पक्के चाटुकार हैं ।

राव— तू फिर आगया ?

अब— आने को मैं गया ही कहां था ? मेरे स्वामी मेरे मालिक, इन धूर्तों के चक्कर में मत पड़ो । योगी से मत लड़ो ।

राव— जिसने भरी सभा में मेरा अपमान किया, मेरी तलवार तोड़ी उसे छोड़ दूँ । जब तक यह टूटी हुई तलवार उसके सीने में नहीं उतार दूँगा चैन नहीं लूँगा ।

सच्चा योद्धा सच्चा क्षत्री अपमान नहीं सह सकता है ।
प्रतिशोध नहीं जब तक लेले चुपचाप नहीं रह सकता है ॥

भगवान दास !

भगवान—सरकार ।

राव— अपने आदमियों को बुलाओ ।

भगवान—(ताली बजाकर) आओ ।

(तीन व्यक्तियों का आना)

तीनों व्यक्ति—हर हर महादेव ।

राव— (बीड़ा रखकर) साहस हो तो बीड़ा उठाओ ।

१-व्यक्ति—जो आज्ञा हो तो ले आयें गगन से हम सितारों को ।
जो आज्ञा हो तो उलटा फेर दें गंगा की धारों को ॥

२-व्यक्ति—जो आज्ञा हो चबा डालेंगे फौलादी कटारों को ।
जो आज्ञा हो निगल जायें धधकते हम अँगारों को ॥

३-व्यक्ति—भभकती भट्टियों में प्राण, अपने झोंक सकते हैं ।
दयानन्द क्या, छुरी यमराज के भी भोंक सकते हैं ॥

भगवान—मगर—?

राव— मगर क्या ?

भगवान—अधिकारियों से कैसे निपटा जायेगा ?

राव— डालियों और दावतों से—

भगवान—तहसील वालों से ?

राव— रसद पहुँचाकर। बेगारें दिला कर।

भगवान—पुलिस से।

राव— पुलिस मेरी जेब में है।

अब— उस सर्व व्यापक सर्व शक्तिमान से ?

राव— चुप।

भगवान—मुक़दमा चला तो ?

राव— यहां से हाईकोर्ट तक रुपया बिछा दूँगा। फांसी के तख्ते से उतार लाऊंगा। जाओ—उस पाखण्डी घमण्डी उद्दण्डी दण्डी का मूंड काट लाओ। मैं खुशी से नाच उठूंगा। कटा हुआ शीस गुरुदेव को भेंट करूंगा।

१—व्यक्ति—यही इच्छा है तो—

२—व्यक्ति—इच्छा को पूरा कर दिखाते हैं।

३—व्यक्ति—रखा जो आपने बीड़ा—

सब— तो हम बीड़ा उठाते हैं॥

राव— शाबाश !

खाँडे परसे तोमर मुग्दर बर्छी भाले ले जाओ तुम।
उस धर्म-ध्वजी का शीश काट पौ फटने तक ले आओ तुम॥

तीनों— हर हर महादेव ! (जाना)

राव— विजय ! विजय !! (जाना)

भगवानदास और नन्दराम (हाथ पर हाथ मारकर) खुशी खुशी। (जाना)

अवधूत—नाश।

छत्र— (आकर) सर्वनाश।

(दोनों का जाना)

चतुर्थ दृश्य

स्थान—कर्णवास में गंगा तट पर स्वामी दयानन्द की कुटी ।

समय—रात्रि का आरम्भ ।

भक्तजन बैठे हैं ।

गोपाल— थाने में रपट भी नहीं लिखाई ?

स्वामी— वह अपने क्षत्रीपन से गिर गया तो क्या हम भी अपने ब्राह्मणत्व से पतित हो जायें । हमें उससे कोई हानि नहीं पहुँची । क्षमा ही हमारा परम धर्म है :—

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीत ।।

गोपाल— मुझे भी सूचना नहीं कराई ?

किशन – सब कुछ पल मात्र में हो गया । महाराज का धैर्य, महाराज का गाम्भीर्य, शान्ति, तितिक्षा, सन्तोष, प्रतिहिंसा का अभाव, देखकर हम तो विस्मय में आ गये । महाराज के प्रति प्रेम, श्रद्धा, भक्ति और सम्मान का भाव कोटिशः अधिक हो गया । आप रपट की कह रहे हैं ? महाराज यह समझते हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं ।

स्वामी— ठाकुर जी, शरीर नाशवान है । बदलता रहता है । आत्मा अमर है । नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावका । न चैनं क्लेदयन्तन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।

शस्त्र छेद सके नहीं पावक जला सके नहीं ।
आयु घटा सके नहीं मारुत सुखा सके नहीं ।।

गोपाल— भगवन ! आप योगी हैं । हम गृहस्थी । आप चोला बदलना ऐसा ही समझते हैं जैसे वस्त्र बदलना । किन्तु गृहस्थी की दशा दूसरी है ।

(अवधूत आदि का मिठाई लेकर आना)

अव— महात्मा जी, राव साहब को अपने किये पर पश्चाताप है— अपनी भूल पर सन्ताप है। इसीलिए दस रुपये और एक मन मिठाई भिजवाई है। अपने अपराध की क्षमा चाही है।

गोपाल— मिठाई ? कैसी मिठाई ! ले जाओ, यहां कोई उनकी मिठाई का भूखा नहीं है। पहिले तलवार चलाना, फिर मिठाई भिजवाना–ज़रूर कोई चाल है।

अव— यह आपका खयाल है। सेवक तो आपका और राव साहब दोनों का नमक हलाल है। क्रोध में आदमी पागल हो जाता है। राव साहब भी क्रोध में भर कर अपराध कर बैठे। अब क्षमा करदें।

गोपाल— यहां आकर सबके सामने माफी मांगें।

स्वामी— हमें इसकी आवश्यकता नहीं है—

मिष्टान्न चाहिये न हमें द्रव्य चाहिये।
व्यवहार ही मनुष्य का बस भव्य चाहिये॥

अव— तो फिर क्या आज्ञा है—

स्वामी— आये हुए व्यक्ति का निरादर करना दयानन्द ने नहीं सीखा है। यह मिठाई भूखों में बँटवादो। रुपया किसी निर्धन को दिला दो।

धर्म के रक्षक बनें वे धर्म के भक्षक न हों।
शेष सम बनकर रहें वे धर्म के तक्षक न हों॥

अव— जो आज्ञा—(सिर झुकाकर) धन्यवाद। (जाना)

स्वामी— अब रात्रि अधिक हो रही है। जाओ विश्राम करो।

गोपाल— हम सब यहीं पहरा देंगे। कर्णसिंह दुष्ट प्रकृति का है सम्भव है रात्रि में आक्रमण करे।

स्वामी— इसकी चिन्ता न करें। जाओ। हमारा रक्षक भगवान है।

क्षमा खड्ग करे यस्य दुर्जनः किङ्करिष्यति ।
अतृणो पतिते वह्नि स्वयमेवोप शाम्यति ॥
क्षमा खड्ग हो हाथ में दुर्जन नहीं बिसाय ।
अतृण ज्वाला भूमि पर पड़े पड़े बुझ जाय ॥

गोपाल— फिर भी कैथलसिंह को यहां छोड़े जाते हैं—कम से कम रात्रि में वे कम्बल तो उढा ही देंगे ।

स्वामी— जैसी इच्छा (कुटिया में जाना)

गोपाल आदि—नमस्तेस्तु भगवन ! कैथल तुम पहरा देना ।

(सबका जाना कैथल का पहरा देना)

कैथल— पांच सहस्त्र वर्ष के सोने वालो जागो। अजी जागो चाहे मत जागो। हम तो जागते हैं। धत्तेरी नौकरी की ऐसी तैसी। ठाकुर लोग तो जाकर आराम से सो रहे और हमें जागने को छोड़ गये (कुटी में झांकना) नाश जाये इस कर्ण सिंह का कम्बख्त ने क्या झगड़ा लगा दिया ।

पांच सहस्त्र वर्ष के सोने वालो जागो। जागो, जागो, जा······गो। जागो (लेटना) जागो (खर्राटे लेना) जागो-जागो (उठकर) स्वामी जी भी विचित्र जीव हैं। जब तलवार हाथ में आई थी तभी कर्णसिंह के भोंक देते तो हमें तो यहां न सोना पड़ता। (अंगड़ाई लेकर) आह हा—जागो—जागो चाहे मत जागो अब यार लोग तो कमर सीधी करते हैं। (सोना)

(तीन व्यक्तियों का आना)

१—व्यक्ति—यह गोल गोल, लम्बा लम्बा क्या है (पीछे को भागना) भूत ! भूत !

२—व्यक्ति—अबे चौकोर चौखटे। कहां है भूत ! देख हम अभी मूंड काट कर लाते हैं। (कुटिया की ओर जाना)

स्वामी— (कुटिया में से) कुऽयां कोऽस्ति ?
कैथल— जागो–जागो ।
३–व्यक्ति—चुपचाप सो जाओ ।
नेपथ्य में—लाओ--लाओ ।
३--व्यक्ति—यहां प्राणों पर बनी है ।
राव— (आकर) बढ़ाओ पैर आगे को—
१–व्यक्ति—बढ़ाये तो नहीं जाते ।
राव— उठाओ शस्त्र बैरी पर—
२–व्यक्ति—उठाये तो नहीं जाते ॥
राव— (पिस्तौल दिखा कर) नामर्दो, आगे बढ़ो, नहीं तो समाप्त कर दूँगा ।
तीनों व्यक्ति—बढ़ते हैं । बढ़ते हैं ।

(तलवार सूंत कर आगे बढ़ना–तलवार में से अग्नि निकलना तलवारें हाथ से गिरना)

राव— हीजो ! कुटी में आग लगादो ।
(तीनों का आगे बढ़ना–कुटी में से ज्वाला निकलना कैथल का जागना । बाहर को भागना)
नेपथ्य में,—आक्रमण, आक्रमण महाराज पर आक्रमण ।

(स्वामी जी का कुटी से निकलना, राव का स्वामी जी पर आक्रमण करना । कई लोगों का बल्लम बर्छी लिये हुये आना । राव का दायें को हटना उधर से भी बल्लम लिये हुये आना हत्यारों का भाग जाना)

(किशनसिंह कैथल आदि का आना)

किशन— धूर्त्त, क्षत्री का वीर्य हो तो–आ ।
(किशनसिंह और कर्णसिंह का तलवारें तौलना)

स्वामी— शान्त ! शान्त !!

भगवान—(आकर) सरकार ! सरकार !! आपका प्रिय अश्व पवन पूत मर गया ।

राव— ऐं—मैं बेमौत मर गया । (तलवार हाथ से छूटना)

नन्द— (आकर) हाईकोर्ट में पचास हजार का मुकदमा हर गया ।

राव— मुकदमा नहीं मैं हर गया । ओह ! रंग जी के मन्दिर में रंगरेलियां मनाने वाले रंगाचारी । मैंने तुम्हें साक्षात वृहस्पति का अवतार माना तुम्हारी आज्ञा को ब्रह्म वाक्य जाना । इसी दिन के लिए जागरण और पुरश्चरण कराये थे (कण्ठी माला तोड़ कर फेंकना) यही दुर्दिन दिखाने को मोहन भोग और रोट चढ़वाये थे । धोका सब धोका, लूट, मार (तिलक मिटाना) और तुम-तुम-तुम सांवरिया श्याम । तुम तनके काले हो और मन के भी काले हो । बांसुरी बजा रहे हो । मेरी दुर्दशा पर मलहार गा रहे हो । तुम पत्थर हो, तुम्हारा दिल पत्थर है तुम ईश्वर नहीं हो । मैंने तुम्हें ईश्वर बनाया । हँस रहे हो-हँसो, हँसो, हँसो । संसार हँस रहा है आकाश हँस रहा है पृथ्वी हँस रही है मैं भी हँसूंगा । हा हा हा, हा हा हा । (गिरना) अवधूत—अ-व-धूत ।

अव— (आकर) सरकार ! सरकार !!

राव— मदिरा-मदि-रा—म-दि-रा (मूर्छा)

अव— नाश ।

छत्र— (आकर) सर्व नाश ।

अव— (स्वामी जी से) बचाओ, बचाओ, भगवन बचाओ कोप दृष्टि हटाओ, इनके परिवार को अनाथ होने से बचाओ । दया निधे ! दया, दया दया दिखाओ ।

स्वामी— न घबराओ ! उत्तेजना के कारण मूर्छा आगई है । (कमण्डल से जल लेकर) ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति । आराम से

घर पहुंचाओ, सेवा सुश्रुषा कराओ। (राव का आंखें खोलना)

अव— उपकार।

छत्र— महान उपकार।

भगवान—दया और आनन्द के हैं योगीवर धाम।

नन्द— ऐसे दया निधान को बारम्बार प्रणाम॥

सब— प्रणाम-प्रणाम प्रणाम।

(सबका प्रेम और श्रद्धा से प्रणाम करना। भृत्य गण राव कर्णसिंह को उठाकर ले जाते हैं। गोपाल सिंह आदि का आना)

स्वामी— अब इस स्थान का वातावरण दूषित हो गया। इसलिए अब यहां से प्रस्थान करेंगे। विचरते हुये सरदौल में स्थान करेंगे।

गोपाल— हृदय में प्रेम उमँड रहा है। आपका विछोह सहन नहीं होगा नहीं होगा भगवन ! (पांव पड़ना)

स्वामी— उठो, लड़कपन की बातें न करो। गायत्री का जाप, सन्ध्या यज्ञ न छूटे ब्रह्मचर्य का व्रत न टूटे। अच्छा (चलने लगना)

किशन— महाराज ! महाराज ! एक विनती स्वीकार करें। अपने कर कमलों से हमारी गौशाला का उद्घाटन करें। पधारें।

गोपाल— किशन सिंह की बात स्वीकार करलें महाराज !

स्वामी— तुम्हारी इच्छा, परन्तु यह कार्य यदि भक्त सैयद अहमद से कराओ तो उत्तम है।

किशन— वे तो मुसलमान हैं।

सैयद— (आकर) मुसलमान होने पर भी मैं गाय को माँ मानता हूं।

पुण्य कोई भी नहीं है गाय के बलिदान में।
है नहीं आदेश गो बलि का कहीं कुर्आन में॥

स्वामी— अब तो संशय निवारण हो गया ।

किशन— हाँ । अब तो मैं तहसीलदार साहब के ही दस्त मुबारक से यह नेक काम कराऊंगा ।

स्वामी— यही उचित है । गौ की रक्षा करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है । गौ वध मुसलमानों के राज्य में भी नहीं होता था । हिन्दू और मुसलमानों में कटुता बढ़ाने के लिए यह प्रथा अंग्रेजों ने चलाई है :—

जिन्हें हैं पालतीं धायें उन्हें क्या प्रेम मैया से ।
पिया है दूध डिब्बे का उन्हें क्या प्रेम गैया से ।।

किशन— गौरी धौरी कपिला श्यामा नन्दिनी यहां मैं लाऊंगा ।
घी दूध दही और मक्खन की मैं नहरें यहां बहाऊंगा ।।

सैयद— मैं भी समझाऊंगा जाकर यह मुसलमानों को ।
रोक दें हिन्द में वे गाय के बलिदानों को ।।

स्वामी— साधुवाद ! शुभाशीर्वाद ।
घर घर में नहर दूध की हो,
घी और मक्खन की ढेरी हो ।
हो ग्राम ग्राम में गोशाला,
तो नगर नगर में डेरी हो ।।

गोपाल— राष्ट्र के उत्थान हित, नर-नारियां गो भक्त हों ।
वेद-पथ-गामी सभी हों धर्म में अनुरक्त हों ।।

गाना

धन्य है ऋषिराज क्या क्या कर दिखाया आपने ।
देश के कल्याण में जीवन लगाया आपने ।।

किशन— रथ तैयार खड़ा है । पधारिये ।

❧ गाना ❧

गोपाल— हो गया था लुप्त भारतवर्ष से वेदों का ज्ञान ।
ज्योति से वेदों की घर घर जगमगया आपने ॥

छत्र—(आकर) आये अनायास कर्णवास में निवास किया,
बुद्धि के विकास का प्रयास अष्टयाम है ।
यम नियम संयम ब्रह्मचर्य्य प्रणिधान,
जीवन का विलास प्राणायाम व्यायाम है ॥
मिथ्या विश्वास और वेद उपहास मेटा,
दुखियों का त्रास मेटा सेवा निष्काम है ।
नया समुल्लास खोला जीवन हुलास घोला,
वेद के प्रचारक को कोटिशः प्रणाम है ॥

❧ गाना ❧

गोपाल— विश्व में हों एक जाती, एक ईश्वर एक धर्म !
वेद का यह सार जीवों को बताया आपने ॥

(तीनों अभियुक्तों का आना)

तीनों— क्षमा, क्षमा क्षमा । (स्वामी जी के चरणों में

स्वामी— तुमसे हमारी कोई हानि नहीं हुई ।

१–व्यक्ति—किन्तु हम तो आपको हानि पहँ
करें भगवन ।

२–व्यक्ति—धन के लोभ से, राव के

३–व्यक्ति—इससे पहिले भी राव
रात्रि को ऐसा आत

स्वामी— आगे को अच्छी वृत्ति बनाओ, परमात्मा से ध्यान लगाओ। हृदय से पश्चात्ताप करो, आत्म शुद्धि के लिए 'ओ३म्' का जाप करो।

तीनों— धन्य है। धन्य है। (गोपाल सिंह से) ठाकुर साहब रथ के बैल खुलवादें। हम स्वयं रथ खेंच के ले जायेंगे। महाराज को सरदौल पहुँचा आयेंगे।

स्वामी— यह अनुचित है।

गाना

गोपाल— आर्यों की विश्व में वैदिक ध्वजा फहराये फिर।
भाव यह जनता के मन में अब जगाया आपने॥

(सब लोग हार फूल पहिनाते हैं)

गाना

गोपाल— यज्ञ का अधिकार प्राणी मात्र को दिलवा दिया।
मन्त्र गायत्री सिखाया और बताया आपने॥

(स्वामी जी का जाना)

सब— ऋषिराज की जय, योगिराज की जय।

॥ ड्राप ॥